आर्यवर्त एवं रोड़ वंश का इतिहास

लेखक:
राम दास रोड़

मूल्य : 200/-

आर्यवर्त एवं रोड़ वंश

मैं एक भेड़ द्वारा संचालित,
एक हजार शेरों की सेना से नहीं डरता।
बल्कि एक शेर द्वारा संचालित,
एक हजार भेड़ों की सेना से डरता हूँ ॥

26 जनवरी, 2004

लेखक :

राम दास रोड़

द्वारा

अपने इकलौते पुत्र

विजय कुमार, बी. ए. प्रथम

सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी शार्टपुट, जैवलिन थ्रो तथा
जूड़ों के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी की मधुर स्मृति में
श्रद्धांजलि स्वरूप समर्पित

शुभ संदेश

हर मनुष्य को अपने वंश व समाज के अतीत के विषय में जानने की इच्छा होती हैं । हमारी यह इच्छा पूरी करते हैं–इतिहासकार, जो अपना सुख–चैन छोड़कर अतीत के पन्नों से तथ्य एकत्र करते हैं तथा इन्हीं तथ्यों के सहारे वे हमें हमारे भूत के बारे में जानकारी देते हैं। ऐसा ही एक प्रयत्न श्री रामदास रोड़ ने अपनी नई पुस्तक 'आर्यावर्त एवं रोड़ वंश' में किया है। इस नई कृति में लेखक ने महाभारत काल से लेकर सन् 2002 ई. तक की आर्यवंश तथा रोड़ों के इतिहास से सम्बन्धित प्रमुख घटनाओं, सूचनाओं तथा तथ्यों को प्रकाश में लाने का एक अद्‌भूत एवं प्रशंसनीय कार्य किया है। अतः हम इस पुस्तक के सफल प्रकाशन की ईश्वर से प्रार्थना करते हैं तथा उत्साही हवलदार (व्यवसाय से) एवं लेखक श्री रामदास रोड़ को शुभकामनाएँ देते हैं।

1. **प्रो॰ मेवासिंह टुरण, (कौल खेड़ा)** डीन एवं चेयरमैन
   व्यवसाय प्रबन्धन विभाग, गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी, हिसार
2. **प्रो॰ रणधीर सिंह (साँच)**
   सी.सी.एस.एच.ए.यू., हिसार
3. **डा॰ भाग सिंह बोदला (पबनावा)**
   गुरु जम्बेश्वर यूनिवर्सिटी, हिसार
4. **डा॰ पाले राम (गुधा)**
   सी.सी.एस.एच.ए.यू., हिसार
5. **डा॰ टेक चन्द (पबनावा)**
   सी.सी.एस.एच.ए.यू., हिसार
6. **डा॰ कली राम (आहू)**
   सी.सी.एस.एच.ए.यू., हिसार
7. **डा॰ यशवीर सिंह आजाद (खरकाली)**
   राजकीय उच्च विद्यालय, भूसली, करनाल

पुरोवाक्

इतिहास लिखते वक्त किसी भी लेखक को कभी भी अपने विचार इतिहास पर नही थोपनें चाहिये। इतिहास प्रमाण मांगता है। इतिहास सन्दर्भ मांगता है। इतिहास सबूत मांगता है। इतिहास का जन्म वीर सैनिक की तलवार से होता है। किसी व्यक्ति का व्यक्तिगत विचार जो नावल या हिन्दी का लेख हो सकता है। वह इतिहास नही हो सकता। इतिहास सबूत मांगता हैं जिस पर लेखक को सालों मेहनत करनी पड़ती हैं। 32 वर्ष की गहन खोज के आधार पर यह पुस्तक लिखने जा रहा हूँ। आर्य जाति क्या है? इसके 36 वंश क्या हैं रोड़ वंश की उत्पत्ति कैसे और कब हुई? आर्य वीरों का इतिहास इस में वर्णित हैं। 'आर्यवर्त व रोड़ वंश' नामक यह पुस्तक आर्य जाति को संगठित कर समाज में आपसी भाई चारा बढाने में मदद करेगी।

जो इतिहास में नहीं है, वो आर्य वीर जिन्होंने भारत वर्ष के उत्थान व निर्माण में बहुत बड़ा योगदान दिया। जिन्होंने हजारों वर्ष तक इस भारत पर राज्य किया और इसके भाग्य का निर्माण किया, उन्ही आर्य वीरों को इतिहास के पन्नों में स्थान क्यों नहीं दिया गया? इसका मुख्य कारण रहा विदेशियों के भारत पर हमले और शासन करना। अंग्रेजों को हम विदेशी कहकर देश से बाहर चले जानें की बात कहते थे। उन्होनें नहले पर दहला जड़ दिया। हम विदेशी हैं, पर आप कौन से स्वदेशी हैं? आप भी बाहर से आये थे–हम से कुछ समय पूर्व ही सही। इसी बात को लेकर उठ गई इतिहासकारों की कलमें। उन्होनें भी अंग्रेजी सरकार की वाह–वाह लुटने के लियें हमें विदेशी ठहराने, हममे आपस की फूट जाति तौर पर डालने में कोई कसर नहीं छोडी। वास्तविकता यह रही, योरूप का प्राचीन नाम स्वामी दयानन्द की सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार 'हरिवर्ष' था। दन्त कथनी के आधार पर आज से पांच हजार वर्ष पहले भारत के राजकुमार अर्जुन ने अमेरिका (पाताल लोक) में शादी की थी। उनका वीर पुत्र बबरू भान अमेरिका का राजा बना था। अमेरिका में रैड इण्डियन (लाल भारती) उसी समय के हैं। अर्जुन ने पाताल लोक में अर्जुन–टाऊन नाम का कस्बा आबाद

किया था। जो आज 'अर्जन–टाइना' नाम का देश हैं। अर्जुन का लड़का बबरू भान अमेरिका से लड़ने के लिये महाभारत में आया था। जब की इतिहास कहता है कि कोलमबस ने अमेरिका को 1440 ई. में खोज निकाला।

सबसे अधिक आभारी मुझे चौ. मान सिंह रोड़ लाखनौर का होना चाहिये। उन द्वारा इक्ट्ठी की गयी इतिहासिक सामग्री से इस पुस्तक का अध्याय 6 परिशिष्ट सात व आठ लिया गया है। मैं भोपाल 3 ई. एम. ई. सेना अधिकारियों, टेकनपुर सि. एम. एम. टी. बार्डर सर्कोटी अधिकारियों व पुलिस अधिकारियों का आभार प्रकट करना चाहूँगा। जिन्होनं नोकरी करते हुये मुझे अध्ययन का माहोल दिया। मैं आई. जी हरि सिंह अहलावत का भी आभार प्रकट करना चाहूँगा। जिन्होंने सरकारीकार एच. वाई. ई. 286 जो अपने रिस्तेदार को प्राईवेट तौर पर दी हुई थी। उसका विरोध करने पर मुझे लाइन हाजीर कर दिया। तीन वर्ष लाइन हाजीर रहते हुये अम्बाला सैन्ट्रल लाईब्रेरी का पूरा लाभ उठाया। इसके बाद पुलिस युनियन से जोड़ कर मुझे सजा के तौर पर डबवाली भेज दिया जहां पर सरसा–ऐलनाबाद–गंगानगर आदि लाईब्रेरियों का पूरा लाभ उठाया। मैं डी.जी.पी. मोहन साहब का अभार प्रकट करना चाहूँगा जिन्होंने मुझे आल इण्डिया डियुटी मीट में हरियाणा पुलिस आटोमोबाइल ट्रांसपोर्ट टीम का कोच नियुक्त किया। भारत में मैडल जीत कर लाये। इसकी बिनाह पर 1500 रू. डी.जी.पी. ने ईनाम देकर इन्सट्रकटर पी.टी.सी. लगा दिया। मधुबन में लम्बे समय तक कालेज की बहुत बड़ी लाईब्रेरी का लाभ उठाता रहा। वहीं से प्राप्त कर सका सैन्सस व गजटीयर की सूचनायें। अपनी धर्म पत्नी श्रीमती कमला चौधरी का भी आभारी हूँ जिन्होंने गृह–कार्यों से छुटकारा देकर मुझे यह पुस्तक तैयार करने में अमूल्य समय प्रदान किया। पुत्री नीरज चौधरी व विजयेता चौधरी के सहयोग के लिये भी आभारी हूँ।

–राम दास रोड़

विषय सूची

क्र.	प्राक्कथन	पृ॰
1.	आर्यवर्त के निवासी आर्य	1
2.	रोड़ वंश के संस्थापक वीर रूरू की प्रमाणिकता	5
3.	रोड़ वंश की उत्पत्ति	8
	अध्याय एक	
1.1	रोड़ वंश में सूर्य वंश, चन्द्र वंश व चौहान वंश ।	13
1.2	जाति।	14
1.3	आर्य जाति के 36 वंश।	15
1.4	रोड़ शब्द की उत्पत्ति।	15
1.5	सूर्य वंश की उत्पत्ति और विस्तार।	16
1.6	ऋषियों से 12 वंशों की उत्पत्ति।	19
	अग्नि से 4 वंशों की उत्पत्ति।	19
1.7	चन्द्र वंश की उत्पत्ति और विस्तार।	19
1.8	चन्द्र वंश से 10 वशों की उत्पत्ति।	26
	अध्याय–दो	
2.1	रोड़ वंश 3182 ईसा पूर्व से 620 ई. तक।	29
2.2	रोड़ वंश के राजाओं की 73 पीढियां।	29
2.3	कांशी राज की तीन पुत्रियों का अपंहरण।	30
(क)	सरदार महाबाहु	33
2.4	वीर रूरू रोड़ वंश के संस्थापक का विस्तृत वर्णन।	39
	49 राजा तालम देव।	63
	60 राजा बालन देव।	64
2.5	राजा तिसमान।	65
2.6	सम्राट धज (रोड़ कुमार) तथा सोरठ का विस्तृत वर्णन।	66
	85 राजा अहीनक।	98

क्र.	प्राक्कथन	पृ॰
	86 राजा परिपत (अहीनक के सूर्यवंशी दामाद)	98
	88 राजा विजयभान।	98
2.7	राजा खंगड़ (खंरगड़)	99
2.8	राजा दद रोड़ 620 ई.।	102
2.9	सेनापती मानू रोड़ 712 ई.।	103
	अध्याय–तीन	
3.1	रोड़ क्षत्रिय वर्ण का एक हिस्सा।	105
3.2	रोड़ क्षत्रिय वर्ण का एक हिस्सा।	105
3.3	रोड़ वंश के शासक प्रथम ईशवी से।	105
3.4	क्या रोड़ व अरोड़ एक हैं?	105
3.5	रोड़ वंश प्राचीन शासकों से सम्बद्ध हैं।	105
3.6	राजा दद रोड़ 620 ई.।	106
3.7	रोड़ दुर्ग 712 ई.।	106
3.8	सेनापती मानू रोड़ 712 ई.।	107
3.9	दीप चन्द चौहान अमीन का जागीरदार 968 ई.।	107
3.10	राणा हर राय का चार किलों पर कब्जा 965 ई.।	107
3.11	दलपते (सेनापती) गोत्र चौहान वंश अमीन के पास 10 गावों में आबाद।	108
3.12	जुण्डला गांव आबाद किया 985 ई.।	108
3.13	चौहान वंश।	108
3.14	अजय देव चौहान व बीसल देव चौहान 1076 ई. ।	108
3.15	बालदा गोत्र के रोड़ो के पास जागीर 1078 ई.।	109
3.16	राजा रायसाल सिंह 1164 ई.।	109
3.17	पृथ्वी राज चौहान	110
3.18	सरसागढ़ की लड़ाई व पृथ्वी राज चौहान	110
3.19	पृथ्वी राज चौहान	110

क्र.	प्राक्कथन	पृ॰
3.20	सेनापती समर सिंह रोड़ 1183 ई.।	110
3.21	जीत सिंह रोड़ जागीर 1187 ई.।	111
3.22	संयोगिता से विवाह 1190 ई.।	111
3.23	रोड़ वंश के पांच सेनापति 1180 ई. से 1192 ई. तक।	111
3.24, 25, 26	तरावड़ी की लड़ाई 1191 ई.।	112
3.27	राजा के पुत्र 1191 ई.।	112
3.28	वेश्या चित्र रेखा।	112
3.29	पृथ्वी राज चौहान के सेनापति।	113
3.30	जय राम चौहान 1201 ई.।	113
3.31	बादली व राय साल सिंह 1164 ई.।	113
3.32	बादली से रोड़।	114
3.33	अहर गांव 1207 ई. ।	114
3.34	समर सिंह रोड़ 1183 ई.।	114
3.35	पृथ्वी राज चौहान कुरु जंगल का निवासी।	114
3.36	मुरादाबाद यू. पी. वासी गावं अमीन के निवासी।	115
3.37	चौहान राज्य की सीमा ।	115
3.38	रोड़ वंश क्षत्रिय जाति है 700 वर्ष पूर्व।	115
3.39	चौहान वंश उत्तरी भारत से।	115
3.40	चौहान वंश उत्तरी भारत से राजस्थान गये।	116
3.41	पृथ्वी राज (प्रथम) पृथ्वी राज (द्वितीय) व पृथ्वी राज (तृतीय)	116
3.42	पृथ्वी राज चौहान व हरियाणा।	116
3.43	रोड़ों पर विजय 1208 ई.।	117
3.44	समेपुर बादली 1206 ई.।	117
3.45	गुलिया बादली 1208 ई.।	118
3.46	उत्तर प्रदेश में रोड़ आबाद।	122
3.47	सहारनपुर में रोड़ आबाद।	122
3.48	पृथ्वी राज चौहान।	123

क्र.	प्राक्कथन	पृ०
3.49	किरपी वीरांगना 1299 ई.।	123
3.50	किरपी वीरांगना 1299 ई.।	123
3.51	उप सेनापति चम्पत सिंह रोड़ 1299 ई. से 1305 ई.।	123
3.52	चार रोड़ वीर शहीद 1352 ई.।	124
3.53	सेनापती गंगू रोड़ 1388 ई. से 1404 ई. तक।	124
3.54	सेनापती गंगू रोड़ 1397 ई.।	125
3.55	रोड़ व तैमूर लंग 3 दिसम्बर 1398 ई.।	125
3.56	दयाल रोड़।	125
3.57	शंकर खिंची रोड़ 1448 ई.।	125
3.58	शीतल चन्द रोड़ 1451 ई.।	126
3.59	हरिराम कादियान रोड़।	126
3.60	शंकर दयाल रोड़ 1461 ई.।	126
3.61	राम दयाल रोड़ 1465 ई.।	127
3.62	अकाल सन् 1580–81 ई.।	128
3.63	कर्म चन्द रोड़ 1598 ई.।	128
3.64	नर सुल्तान सिंह रोड़ 1606 ई.।	128
3.65	तेज पाल रोड़ 1627 ई. से 1658 ई.।	129
3.66	टूरण गोत्र के रोड़ जोगी बनें 1632 ई. तक।	129
3.67	गांव झंझाडी आबाद 1636 ई.।	129
3.68	नैन मुख रोड़ 1577 ई.।	129
3.69	रोड़ वीरों का बलिदान 1669 ई.।	130
3.70	पृथ्वी राज चौहान का महल।	131
3.71	कल्लू सिंह रोड़ 1701 ई.।	131
3.72	कल्लू सिंह रोड़ 1701 ई.।	131
3.73	वीर बन्दा बहादुर 1706 ई.।	132
3.74	जय सिंह रोड़ 17वी शताब्दी।	132
3.75	ईश्वरी सिंह रोड़ 1747 ई.।	134
3.76	सेनापती कल्लू रोड़ 1701ई.।	135
3.77	देवत राय रोड़ व चार वीर।	136

अध्याय–चार

4.1	चौहान वंश रोड़ों में।	142
4.2	चौहान वंश की उत्पत्ति।	142
4.3	पृथ्वी राज चौहान के पिता कौन थे।	144
4.4	इतिहास में तीन पृथ्वी राज।	144
4.5.6	समर सिंह रोड़ 1183 ई.।	144
4.7	अग्नि वंश	145
4.8	पृथ्वी राज चौहान 'कुरु' जांगल नरेश।	145
4.9	मुरादाबाद यू. पी. वासी रोड़ व अन्य चौहान।	145
4.10	कलायत राज्य के उत्तर में चौहान राज्य।	145
4.11	पृथ्वी राज़ चौहान की प्रतिमा दरबान के स्थान पर।	146
4.12	पृथ्वी राज चौहान का जन्म।	146
4.13	तरावड़ी का युद्ध 1191 ई.।	146
4.14	चौहानामास को चौहान नही कहा जा सकता।	146
4.15	पृथ्वी राज चौहान की लड़की बेला का रिश्ता।	147
4.16	पृथ्वी राज चौहान व राजपूत राजाओं की लड़ाई।	147
4.17	पृथ्वी राज चौहान की कचैहरी।	148
4.18	महुबे वालों का घेरा देना।	148
4.19	रोड़ वंश क्षत्रिय वर्ण से।	148
4.20	उत्तरी भारत में चौहान वंश।	148
4.21	तरावड़ी के मैदान में पृथ्वी राज चौहान की हार।	148
4.22	चौहानों का पंजाब से राजस्थान को प्रस्थान।	148
4.23	पृथ्वी राज तृतीय ने हरियाणा और दिल्ली पर कब्जा किया।	149
4.24	रोड़ व कुतुबद्दीन ऐबक 1208 ई.।	149

क्र.	प्राक्कथन	पृ०
4.25	दिल्ली के लोह स्तम्भ पृथ्वी राज तृतीय के राज्य में।	149
	अध्याय–पांच	
5.1	रोड़ शासक से सम्बन्धित हिन्दी लेख 1764 ई.।	153
5.2	जम्मू में छम्ब जोरिया में 'धान रोड़न' नामक बस्ती आबाद हैं।	153
5.3	कैथल के दक्षिण में रोड़ आबाद।	153
5.4	सागर सिंह महला–खटका नगरी का जागीरदार।	153
5.5	सन् 1857 ई. की क्रान्ति में रोड़ों का योगदान।	156
5.6	सन् 1857 ई. ब्रिटिश शासन के सभी चिन्ह मिटा दियें।	157
5.7	1857 ई. करनाल परगना।	157
5.8	1857 ई. में रोड़ नेता।	157
5.9	स्वतन्त्रता आन्दोलन।	157
5.10	रामरोड़ की वीरता 5 अगस्त 1857 ई.।	157
5.11	सम्राज्ञी विक्टोरिया 1858 ई. को हरियाणा को पंजाब में शामिल।	158
5.12	रोड़ी शंकर शहर।	158
5.13	1881 ई. को 197 रोड़ पढ़े लिखे थे।	158
5.14	सन् 1881 ई. व 1891 ई. की सैन्सस के अनुसार रोड़ सेना में भर्ती हो सकते हैं।	158
5.15	सन् 1881 ई. में रोड़ों की करनाल में आबादी।	159
5.16	रोड़ें के अमीन के पास चौरासी गांव 968 ई. से पहले से आबाद।	159
5.17	भारत में 1881 ई. के सैन्सस के अनुसार रोड़ें के कबीलें।	159
5.18	सैन्सस रिर्पोट 1911 ई. में रोड़ों की आबादी 1,63,226 थी।	160
5.19	रोड़ राज्य भरेह रियासत व भीरवरा के राज्य।	161
5.20	जिला इटावा जिला बुलन्द शहर जिला बांस बरेली, जिला बदांयु में रोड़ आबाद।	161
5.21	विश्नोइयों में रोड़ वंश का गोत्र लोहम रोड़ शामिल।	162
5.22	रोड़ वंश के रीति रिवाज।	162

क्र.	प्राक्कथन	पृ०
5.23	रोड़ आबाद हैं।	162
5.25	पुरांणों में रोड़ वंश के गांवों का जीक्र।	162
5.26	रोड़ों की पहचान।	162
5.27	राजपूतों की उत्पत्ति 747 ई.। क्षत्रिय दर्जा दिलाया गया।	162
5.28	राजपूत गोत्र के लोग।	163
5.29	रोड़ 1192 ई. के बाद।	163
5.30	रोड़ वंश के गांव।	163
5.31	1857 ई. की क्रान्ति व रोड़।	164
5.32	रोड़ और सैणी।	164
5.33	अमीन गांव।	164
5.34	दुर्ग खंगड़ रोड़।	164
5.35	खटका नगरी ।	164
5.36	रोड़ वंश महाभारत काल से।	164
5.37	सैन्सस रिपोर्ट 1881 ई. व 1911 ई.।	165
5.38	सैन्सस रिर्पोट 1911 ई. लोहारू (भिवानी) दुजाना (रोहतक) पटोदी गुडगांव में रोड़ आबाद थे।	165
5.39	पंजाब प्रान्त में रोड़।	165
5.40	थानेसर में रोड़।	165
5.41	पंजाब प्रान्त जिला होशियारपुर में आबाद रोड़।	165
5.42	पंजाब प्रान्त जिला पटियाला में आबाद रोड़।	166
5.43	अग्रेज ईव्टसन रिर्पोट न. 55 जिला अम्बाला में रोड़।	166
5.44	गढ़ कुण्डार 1182 ई. से 1288 ई. तक रोड़ शासन।	166
5.45	बिहार में रोड़ आबाद।	167
5.46	रोड़ वंश के एम. एल. ए।	167
5.47	बिहार में रोड़।	167

क्र.	प्राक्कथन	पृ॰
	अध्याय–छः	
1.	रोड़ों के कुल 126 गौत्र है। 111 गोत्रों का विस्तृत वर्णन	171
2.	रोड़ वंश के 328 गोवों की सूची।	188
3.	भारतीय सेनाओं में रोड़ अधिकारियों की सूची।	194
	अध्याय–सात	
	परिशिष्ट– एक	200
	रोड़ दर्पण–1	
	परिशिष्ट–दो	203
	प्राचीन रोड़ वंश शासकों की वृक्षावली।	
	परिशिष्ट–तीन	205
	रोड़ वंश	
	परिशिष्ट–चार	207
	मुजफर नगर से उपलब्ध पत्र ।	
	परिशिष्ट–पाँच	209
	ट्राईब्ज एण्ड कास्ट आफ दी नोरथ वैस्टर्न प्रोविनसीज अवध बाई डब्लू क्रूक, पृ. 243	
	परिशिष्ट–छः	211
	आर्केल्योजिकल सर्वे आफ इण्डिया रिर्पोट फोर दी इयर 1871–72 वोलुम–4	
	परिशिष्ट–सात	215
	जिला रोहतक का गजटियर 3 ए सन् 1910 में रोड़	
	परिशिष्ट– आठ	218
	जातियों की सुची व रोड़ वंश	
	परिशिष्ट–नौ	238
	रोड़ हिन्दू हैं। रोड़ वंश बारे।	

आर्यवर्त के निवासी आर्य

इतिहास हमेशा उन वीरों ने लिखा है। जिनके एक हाथ में तलवार है और दूसरे हाथ में परमात्मा ने कलम की शक्ति दी है। इतिहास को सेना के कर्नल टाड ने लिखा, इतिहास को सेना के कर्नल क्रूक ने लिखा, इतिहास को सेना के मेजर कनिंघम व मेजर लिसबन ने लिखा। क्योंकि इतिहास का जन्म वीर सैनिकों की तलवार से होता हैं। लेखक एक सैनिक के रूप में भारतीय सेना में सेवार्थ रहा हैं।

भारतीय–अमरीकी विद्वानों के एक वर्ग ने दावा किया है, कि आर्य भारत के मूल निवासी थे। परिस्थितिकीय और राजनीतिक कारणों से भारत से ही आर्य पश्चिम एशिया होते हुये यूरोप तक पहुंचे। शोधकर्त्ताओं ने यह दावा ताजा पुरातात्त्विक अनुसंधानों भूजल सर्वेक्षणों, उपग्रह से प्राप्त चित्रों प्राचीन शिल्पों की वैज्ञानिक तिथियों, ज्यामिति और वैदिक गणित के सटिक आंकड़ों के आधार पर किया है। उनका मानना है कि महाभारत का समय ईसा से लगभग 3102 वर्ष पूर्व था। सरस्वती नदी 1900 ईसा पूर्व सूख गयी थी।

भारतीय–यूरोपीय इतिहासकारों का अभी तक यही मत है कि मध्य एशिया से आर्यों ने ईसा से 1500 वर्ष पूर्व भारत पर उत्तर पश्चिम किनारे से आक्रमण किया जहां के मूल निवासी द्राविड़ों को पराजित किया। सिन्धु घाटी में उनके नगरों को तबाह किया और द्राविड़ों को हजारों कोस दूर देश के घुर दक्षिणी हिस्से में धक्केल दिया। लेकिन जिन तर्को के आधर पर यह बात कही गयी थी। भारतीय – अमरीकी इतिहासकारों ने उन्हें हर ढंग से गलत साबित किया है।

आर्यों को विदेशी आक्रांता बताने वाले इतिहासकारों का मत रहा है कि सभ्यता का उदय मैसोपोटामिया की नदी घाटियों से हुआ, हड़प्पा के नगर नियोजन पर यूनानी ज्यामिति की छाप हैं। भारत के आयरलैण्ड तक भाषाओं

में समानता का कारण भी यही है कि आर्य मध्य एशिया से भारत आये थे।

बेंगलूर के डॉ एन. एस0 राजा राम गणितज्ञ और कम्प्यूटर विशेषज्ञ भी है। इस समय वह अमरीका में टेकसास के ह्यूस्टन नगर में रह रहे हैं। उन्होंने यहां बताया कि भारतीय–अमरीकी इतिहासकारों ने सच की तह तक पहुंचने के लिय बीसवीं शताब्दी में उपलब्ध अत्याधुनिक संसाधनों का सहारा लिया हैं।

डॉ राजा राम का मत है कि 19वीं शताब्दी के भाषा शास्त्र के सिद्धान्त ऐसा परिदृश्य खींचते हैं । जो पिछले दो हजार वर्ष की भारतीय परम्परा को खारिज करने की सलाह देता हैं दूसरी और भारती अमेरीकी इतिहासकारों का दृष्टिकोण यह है कि परम्पराओं को स्वीकार किया जाना चाहिए और इतिहास के माडलों को सुधारा जाना चाहिए। यदि नए सबूत उनके विपरीत हो तो उन माडलों को अस्वीकार भी किया जा सकता है।

इस दृष्टिकोण को सामने रखकर उन्होंनें भारतीय इतिहास की जड़ों की और लोटना शुरू किया तो पाया कि महाभारत का समय ईसा से 3102 वर्ष पूर्व के आसपास का था। महाभारत के इस काल को मिथक नही माना जा सकता क्योंकि उपग्रह से प्राप्त चित्रों से पता चलता है कि महाभारत के वर्णनों में सरस्वती का लेख मिलता हैं। सूत्र साहित्य मे अत्याधिक विकसित ज्यामिति शास्त्र हैं। लिहाजा यह भी नही माना जा सकता कि भारतीयों ने ज्यामिति यूनानियों से उधार ली थी। जिस प्रेमय को पाइथागोरस की प्रेमय कहा गया है। उसका उल्लेख पाइथागोरस से दो हजार वर्ष पहले बोधायन ने अपने सुलभ सूत्र में कर दिया था। सूल्भसूत्र में हवनकुण्ड की जो ज्यामिति दी गई है कि वह हड़प्पा सभ्यता के अवशेषों में पाई जाती है। लिहाजा हड़प्पा के शहर 2700 ईसा पूर्व में जिस समय गोरव के चरम पर थे उससे कही पहले महाभारत का युद्ध हुआ था।

इन सब ठोस प्रमाणों के आधर पर इन इतिहासकारों ने प्राचीन भारतीय इतिहास के सूत्र 3102 ईसा पूर्व में हुए महाभारत से पकड़ने

शुरू किये। इससे यह तर्क स्वतः खारीज हो जाता है कि सभ्यता का अनुसरण 300 ईसा पूर्व में मैसोपोटामिया से हुआ। लोकमान्य तिलक और डैविड फावेले वैदिक विद्वानों ने ऋग्वेद में 6000 इसा पूर्व की तिथियों का संकेत भी पाया है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ 189 पर यूरोप को 'हरिवर्ष' लिखा हैं। इसके इलावा भारत के राजकुमार अर्जुन ने अमेरिका देश की दो नागवंशी राजकुमारियों उलूकी व चित्रागंदा से शादी की थी। अर्जुन की रानी उलूकी से हरावन दूसरी रानी चित्रागंदा से बबरू भान पुत्र जन्में दोनों अपने ननिहाल अमेरिका में रहे। अमेरिका में रह रहे रैड–इण्डियन जो अमेरिका की सबसे प्राचीन जाति है। महाभारत से बहुत पहले भारत से अमरिका में जाकर आबाद हो गये थें अर्जून ने अर्जुन–टाऊन आबाद किया था जो आज का अर्जन–टाइना सयुंक्त राज्य अमेरिका का ही देश है।

अबुल फजल ने महाभारत का युद्ध 3000 ईसा पूर्व हुआ बतलाया हैं। एक शिलालेख पर कलियुग सम्वत् जिसे पाण्डव सम्बत भी कहते है, लिखा मिला है। डॉ डी. एस. द्विवेदी ने ग्यारह शिलालेखों तथा प्राचीन काल के साहितय का अध्ययन करके एक खोज की है। महाभारत युद्ध 14 नवम्बर 3137 ईसा पूर्व दिन मंगलवार को हुआ था। यह कलियुग सम्वत् 3102 ईसा पूर्व प्रारम्भ होने से 36 वर्ष पहले की घटना है। आर्य मध्य एशिया से भारत आये। इन सब तर्को को भारतीय अमेरिका शोधकर्त्ताओं जिनमें अमेरिका की अंतरिक्ष संस्था नासा के सलाहाकार डॉ. राजा राम, डैविड फावले, जार्ज पयूरिस्टीन, हैरी हिक्स, जेम्स शेफर, मार्क क्योनर सर्व श्री एस. आर. राज, बी. जी. सिद्धार्थ, पी.वी पठान प्रमुख है उपरोक्त ने खारिज करने की सलाह दी है।

कर्नल अलकाट ने अपने प्रसिद्ध भाषणों के द्वारा यह उत्तमतया सिद्ध कर दी है कि मिश्र को बसाने वाले लोग आर्यवर्त से अर्थात् भारत से ही वहां जाकर बसे थे। पारसियों का धर्म ग्रन्थ 'जिन्दाबस्ता' चार हजार वर्ष पुराना हैं उसमें वेदों का उल्लेख है। अथर्ववेद का एक मन्त्र भी लिखा है।

शन्नों देवीरभिष्टये आयो भवन्तु पीतये।
शंयोरमिस्त्रवस्तु नां।।

प्राचीन यूनानी, रूसी, इंगलिश, फ्रांसिसी, जर्मन और फारिस आदि के समस्त पूर्वज आर्य थे।

इसी प्रकार भारत से जाकर मारिशस देश, फिजी देश, रोड़ एसिया, कम्बोडिया आदि देशों को भारतीयों ने आबाद किया था। 2001 ई. में मारीशस का प्रधान मन्त्री अनिरूद्ध जगन्नाथ था । फिजी का प्रधान मन्त्री चौ. महेन्द्र सिंह जाट था। सीसल रोड़ एक दुशाहसी व्योपारी था । जो अफीका में व्योपार करने गया था वहां पर रोड़ेशिया शहर आबाद किया था। जलन्धर से प्रकाशित एम. बी. डी. मे इसका उल्लेख है । रोड़ एशिया का खिलाड़ी जो संसार का सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट खिलाड़ी था ज्योंटी रोड़ था। इसी प्रकार कम्बोडिया को कम्बोज जाति ने आबाद किया था।

उपरोक्त तथ्य केवल भारत के इतिहासकारों को ही नहीं बल्कि संसार के इतिहासकारों को भी इस विषय को लेकर किसी निर्णय पर पहुंचने के लिये प्रेरित करेगें कि आर्य लोग भारत वर्ष आर्यावर्त से ही विदेशों में जाकर आबाद हुये।

रोड़ वंश के संस्थापक रूरू की प्रमाणिकता

सबसे पहले हमारे लिये ये समझना जरूरी है कि प्रत्येक युग का कार्यकाल क्या है।

सतयुग की आयु	=	1728000 वर्ष
त्रेता युग की आयु	=	1296000 वर्ष
द्वापर युग की आयु	=	864000 वर्ष
कल युग की आयु	=	432000 वर्ष

वंश को समझने के लिये यह जानना जरूरी है। कोन वंश कब आरम्भ हुआ। सतयुग में देवता वंश सतयुग और त्रेतायुग के संगम पर सूर्य वंश, त्रेता युग, और द्वापर युग के संगम पर चन्द्र वंश द्वापर युग और कलयुग के संगम पर छतीस वंशों की उत्पत्ति हुई। रोड़ वंश आर्य जाति के छात्तिस वंशों में से एक है। इसमें सूर्य वंश, चन्द्र वंश और चौहान वंश के गोत्र सामील हैं।

भाटों द्वारा प्रदत्त सामग्री के अनुसार प्रयाग राज (इलाहाबाद) के शासक ययाती के वंश दुरदान (दुष्यन्त) जिनका पुत्र राजा भरत था। जिनके नाम पर इस देश का नाम आर्यवर्त से भारत पड़ा। जिन्होंने (दुरदान) ने खटकानगरी की स्थापना की थी, से 26 पीढ़िया गुजरने पर रोड़ वंश के संस्थापक राजा रूरू हुये। नीचे रूरू से आगे रोड़ वंश की वृक्षा वली प्रस्तुत है।

उपरोक्त रिपोर्ट के अनुसार यह समय महाभारत का समय हैं। यहाँ पर प्रतीप के तीन पुत्र है। जिनमें शान्तनु के भाई सरदार महाबाहु का ज्येष्ठ पुत्र रूरू हैं। इस सूची में रूरू से दद रोड़ 620 ई. तक क्र. नं. 28 से 101 तक 74 राजा हैं। सम्राट धज उर्फ राजा रोड़ के पिता इन्द्रमन है और दादा तिसमान हैं।

डॉ. राज पाल सिंह की रोड़ इतिहास की झलक के पृ. नं. 89 से 92 तक उपरोक्त सुची से पुर्ण रूप से मेल खाती है। इसी प्रकार रामदास

रोड़ की वीर भूमि भारत पृ. 41 से 163 पर उपरोक्त दोनों रिर्पोटों से मेल खाती हैं।

क. मा. मुशी के महामुनी ग्रन्थ व भगवान परशुराम ग्रन्थ में वीर रूरू का इतिहास, परशुराम द्वितीय के साथ लम्बी लड़ाई। शान्तनु के भाई सरदार महाबाहु के पुत्र रूरू। ये दोनों पुस्तके उपरोक्त चारों रिर्पोटों से मेल खाती है। सरसा–डबवाली सड़क पर राजा अरुट का बुत है। इस बुत के पास शिलालेख पर राजा शान्तनु के भाई बालिका का पुत्र अरूट दिखाया हैं। इसी प्रकार डॉ. हरनाम सिंह मोगा के अरोड़ वंशिय जातिय इतिहास के पृ. 16 व डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान के रोड़ उदभव एवं विकास पर महाराज बालिका पाण्डु की तीसरी पीढ़ी के पुर्वज थे और महाराज शान्तनु के सगे भाई थे। उपरोक्त आठों रिपोर्टें इस बात पर सहमत हैं। कि शान्तनु, सरदार महाबाहु बालिका सगे भाई थे। भीष्म, रूरू, अरूट ये तीनों चचरे भाई थे। डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान ने रोड़ उदभव एवं विकास के पृ. 92 से 110 तक रोड़ व अरोड़ों को एक ही परिवार से लिखा है।

दि स्टडी आफ इण्डियन ट्रेडिसन इण्डिया 1953 सिलवर जुबली इसू तथा जर्नल आफ इण्डिया हिस्ट्री नं.143 परशु राम विषयांक अनुसार आज से पांच हजार वर्ष पहले खटका नगरी के राजा रूरू के समय परशुराम ने जब एक जंगल में लड़ने के लिए कुछ रोड़ों को ललकारा लेकिन उन्होंने यह कह कर कि हम रोड़ नहीं हैं। बल्कि और हैं। अरोड़ हैं। परशुराम द्वितीय से लड़ने से इन्कार कर दिया। रोड़ के मायने योद्धा होते है। इसी कारण से रोड़ व अरोड़ दोनों आपस में अलग हो गये।

उपरोक्त सभी रिर्पोटें प्रमाणित करती हैं कि रूरू का जन्म आज से पांच हजार वर्ष पहले महाभारत के समय हुआ था।

राम लाल मनियाल की रोड़ जाति का इतिहास पृ.28 से 31 व सुगन चन्द रोड़ वंशी की लुप्त इतिहास पृ. 7–8 पर रोड़ राजाओं की दी गई सूची उपरोक्त रिर्पोटों से मेल खाती हैं। लेकिन यह सूची चन्द्र वंशियों के साथ होनी चाहिये। क्योंकि त्रेता काल में केवल सूर्य वंश ही था। जबकी द्वापर युग में सूर्य

वंश और चन्द्र वंश दोनों थे । कलयुग में चौहान वंश भी इनके साथ मिल गया था। त्रेतायुग के रूरू का समय (कार्यकाल) निकालें तो त्रेतायुग की आयु 1296000 वर्ष द्वापर युग की आयु 864000 वर्ष 5000 कलयुग।

अर्थात् त्रेता युग का रूरू 2165000 वर्ष पहले हुआ जो किसी भी हालत में स्वीकार नहीं किया जा सकता जबकि महाभारत के समय का रूरू आज से पांच हजार वर्ष पहने हुआ जो वास्तव में रोड़ वंश का संस्थापक था। रोड़ों का इतिहास महाभारत से अब तक अर्थात् पिछले 5000 वर्ष का इतिहास ही प्रमाणों सहित उपलब्ध हैं।

राम लाल सिंह मनियाल रोड़ जाति का इतिहास पृ. 35 पर रूरू को कुरू का पोता लिखते हैं। यह घटना द्वापर के आखिर की घटना है। जो चन्द्र वंशियों से मेल खाती है। राम लाल सिंह मनियाल पृ.39 पर लिखता है कि रूरू का पुत्र तालमदेव की पुत्री चतरंगा देवी का विवाह मथुरा के शासक शूरसेन वंश के साथ हुआ था। यह शुरसेन वंश कृष्ण और उग्रसेन का वंश था। उपरोक्त लाइनें यह प्रमाणित करती हैं कि रूरू का जन्म महाभारत के समय द्वापर युग के आखिर में हुआ था। यह चन्द्र वंशी था। इन लाईनों में मनिपाल साहिब ने यह स्वीकार किया है कि रोड़ वंश के संस्थापक रूरू आज से 5000 वर्ष पहले महाभारत के समय हुआ। रूरू का जन्म कुरू के बाद हुआ। मथुरा के शाशक को कृष्ण जी के समय का मानते हैं। जो चन्द्र वंशी सिद्ध होता है। महाभारत के समय (द्वापर युग) के रूरू से 38 पीढ़ीयां गुजरने पर सूर्य वंश के संस्थापक अहीनक हुये। जिनसे बाद में सूर्य वंश की उत्पत्ति हुई।

3. रोड़ वंश की उत्पत्ति

रोड़ इतिहास पर लिखने वाले किसी भी लेखक को यह समझ लेना चाहियें कि रोड़ वंश को कभी भी रोड़ जाति नहीं लिखना चाहिये। अगर रोड़ जाति है तो फिर आर्य क्या है। वास्तव में आर्य जाति के 36 वंशों में रोड़ एक वंश हैं। कुछ लेखक 36 जातियां लिखतें हैं। वे अज्ञानी हैं। उन्हें जाति और वंश के भेद का ज्ञान होना चाहियें। कौम के मायने भी जाति ही होता है। यह ठीक हैं कि रोड़, जाट, गुज्जर, अहीर, अरोड़ा आदि आर्य जाति के 36 वंशों से है। जो कभी एक ही परिवार के सदस्य रहे हैं। लेकिन यह कहना कठिन हैं कि अरोड़ों से रोड़ों की उत्पत्ति हुई।

इतिहास पर कभी भी अपने विचार नही थोपने चाहिये। इतिहास प्रमाण मांगता हैं। सरसा–डबवाली सड़क पर राजा अरूट का बुत है जो एक सैनिक की वेशभूषा में है। वहां पर शिला लेख में अरूट का इतिहास लिखा है। राजा शान्तनु के भाई बालिका का पुत्र अरूट है। अरूट ही अरोड़ा वंश के संस्थापक है। इसी प्रकार क.मा. मुशी के महामुनि ग्रन्थ, भगवान परशुराम ग्रन्थ, 1984 में रामदास रोड़ द्वारा लिखित वीर रूरू के अनुसार शान्तनु के भाई सरदार महाबाहु के ज्येष्ठ पुत्र रूरू थे। यहां पर यह प्रमाणित हो जाता है कि शान्तनु सरदार महाबाहु और बालिका तीनों सगे भाई हैं। भीष्म, रूरू व अरूट ये तीनों चचेरे भाई हैं। भाटों द्वारा प्रदत्त सामग्री के अनुसार ययाति के वंशज दूरदान (दुष्यन्त) से 26 पीढ़ियाँ गुजरनें पर रोड़ वंश के संस्थापक रूरू हुये। डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान रोड़ उदभव एवं विकास के पृष्ठ 5 पर लिखते है कि अरोड़ वंशी राजा दाहीर की सेना का मुख्य अंग था। यहां पर यह भी याद रखना चाहिये कि राजा दाहीर का सेनापती मानू रोड़ था। मानू रोड़ ने 710 ई. में अरब सेनापति अब्बदुल्ला का सिर काटा था। राजा दाहीर ने मानू रोड़ को बहादुरी पर तलवार भेंट की और सिन्ध राज्य के देवल प्रान्त का सेनापति नियुक्त किया इसके इलावा देवा जी राज पुरोहित ने 620 ई. को सिन्ध के राजा दद रोड़ को जहर देकर मार डाला था। सिन्ध की गद्दी देवा जी ब्राह्मण के पास 620 ई. को चली गई। इनके

बाद साहसी राय, राजा चच 630 से 636, राजा चन्द्र 636 ई. 644 ई. राजा दाहीर 644 ई. से 712 ई. तक पांच ब्राह्माण शासक हुये।

कादियान साहिब पृ. 45 पर लिखते हैं कि अंग्रेजो के समय अरोड़ों को जमीन से बेदखल कर कर यह जमीन बलोचों के नाम चढ़वा दी थी। लेकिन रोड़ों को कभी भी जमीन से बेदखल नही किया। रोहतक डिस्ट्रकट गजटीयर वोलुम III ए सन् 1910 ई. के अग्रीकलचर ट्राईब्ज अन्डर दी लैण्ड, अलाईनेशन एकट आफ 1910 के अनुसार अहीर, ब्लोच, गुज्जर, जाट, माली, मुगल, पठान, राजपूत, रोड़, सईयद, गोढ ब्राह्माण ये सभी एक ग्रुप के जमीदार थे। इसी रिर्पोट में पृ. 69 पर रोहतक में रोड़ों के बहुत अधिक गांव थे जो 1910 के गजटियर के समय नहीं मिलें।

राम लाल मनियाल ने रोड़ जाति का इतिहास पृ. 28 रूरू रोड़ वंश के संस्थापक है उनका जन्म सूर्य वंश त्रेता युग में माना। इसके अनुसार त्रेतायुग का समय 1296000 वर्ष है+ द्वापार युग का समय 864000 वर्ष+कलयुग जो गुजरा+5000 वर्ष अर्थात् 2165000 वर्ष पहले रूरू हुआ। लेकिन रोड़ों का 5000 वर्ष पुराना इतिहास प्रमाणित है। रूरू महाभारत से कुछ समय पहले पैदा हुआ जो ठीक है।

सुगन चन्द रोड़ वंशी, रोड़ वंश लुप्त इतिहास पृ. 13 डां. सुरेन्द्र सिंह कादियान रोड़ उदभव एवं विकास पृ. 25 पर और शब्द का प्रयोग किया है। जिस बारे परशुराम ग्रन्थ महामुनि ग्रन्थ, डेन्जिल ई. बेटसन की पुस्तक के कुछ अंश अंग्रेज डब्ल्यू क्रूक की रिर्पोट पृ. 243, राम लाल मनियाल गांव बेलड़ा, रोड़ जाति का इतिहास पृ. 38, दि स्टडी आफ इण्डियन ट्रेडीसन इण्डिया 1953 सिल्वर जुबली इसू तथा जर्नल आफ इण्डिया हिस्ट्री नं. 143 परशुराम विषयांक व जगे भाट सुल्तान सिंह व देश राज कृत रोड़ इतिहास के आधर पर बीर रूरू, सहस्त्रार्जुन परशुराम द्वितीय भीष्म पितामह, अरूट ये सब समकालीन हैं। रूरू भीष्म पितामह के चाचा सरदार महाबाहु के ज्येष्ठ पुत्र हैं। हिस्ट्रीन 143 परशुराम विषयांक के अनुसार 'आज से पांच हजार 5000 वर्ष पहले खटका नगरी के राजा

रूरू के समय परशुराम ने जब एक जंगल में लढ़ने के लिये कुछ रोड़ों को ललकारा लेकिन उन्होने यह कहकर कि हम रोड़ नहीं है। बल्कि और है। अरोड़ है। व्यापारी हैं। परशुराम द्वितीय से लड़ने से इन्कार कर दिया। इसी घटना से द्वापर युग में रोड़ों से उनके भाई अरोड़ अलग हो गये। रोड़ के मायनें योद्धा होता हैं।

ऐटोमोलोजी–एपलादड टू नेमज आफ वैरियर ट्राईब्ज (यौद्धाओं के कुल) में भी रूढ (रोड़) के अर्थ को स्पष्ट करते हुए इसे ऊंचा कुल कहा है।

अब हमें भगवान परशुराम व परशुराम द्वितीय की प्रमाणिकता पर खोलकर विचार करना चाहिये। त्रेता युग में रामायण के समय जो परशुराम था। वही भगवान परशुराम है। महाभारत के समय जिस परशुराम को भीष्म व कर्ण का गुरू कहा जाता हैं वह भगवान परशुराम से अलग है। दोनों के समय का गायप त्रेतायुग 1296000+द्वापर युग का यम 864000 वर्ष = 2160000 वर्ष का गायप है। जो किसी भी हालात में स्वीकार नहीं किया जा सकता। महामुनि ग्रन्थ के मुताबिक अनूप देश (मध्य प्रदेश) पर राजा महिष्मती राज करता था। राजा महिष्मती ने अपने पुत्र कृतवीर्य को राज्य से बंचीत रखते हुये अपने पोत्र सहस्त्रार्जुन को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

महाअर्थवण ऋचक अनूप देश के राजा महिष्मति का राजपुरोहित था। किसी बात पर राजा से अनबन होने पर अनूप देश छोड़कर आर्यवर्त भाग गया। ऋचक का पुत्र जमदग्नि था। जमदग्नि की पत्नी रेणुका थी। जमदग्नि के चार पुत्र थें । वीर रूरू अनूप देश के राजा सहस्त्रार्जुन की सेना में सेनापती था। जमदग्नि के सब से छोटे पुत्र का नाम राम था। राम को सहस्त्रार्जुन ने जेल में डाला हुआ था जब सहस्त्रार्जुन ने लंका के राजा रावण द्वितीय पर हमला किया। उस समय राम सहस्त्राार्जुन की होने वाली पत्नी लोमहर्षीणी को ले उड़ा। राम की माता रेणुका को मृत्कावती का राजा गान्धर्व उठा कर ले गया था। जमदग्नि ने अपने छोटे पुत्र राम को आदेश दिया कि वह मेरी पत्नी को गान्धर्व राज की जेल से निकाल कर लाये। इसी

समय राम ने परशु उठाया था। और परशुराम कहलाया। परशुराम के बारे में कहावत है। कि उन्होनं ईकीस बार जमीन को क्षत्रिय – विहीन किया। लेकिन फिर भी महाभारत में 18 अक्षोहिणी सेना कहां से आई। परशुराम द्वितीय महाभारत में भी शामिल नही हुआ।

1348 ई. को जीत सिंह अपने दो पुत्र देवा सिंह व धूप सिंह को लेकर पहले से आबाद गांव अहर में झोझरू से आ गया। 1283 ई. को रामधन अपने दो पुत्र जगरान और जुगलाल को लेकर बादली से कुराना आ गया। जगरान की सन्तान गांव कुराने में आबाद हो गई। जोगरान रोड़ कहलाये दुसरा पुत्र जुगलाल की सनतान जागलान गोत्र के जाट कहलाये समधान गोत्र के रोड़ जैसलमेर से कगरोल खेड़ा राजा खंरगड़ रोड़ का किला से बादली से 1208 ई. को करेला झमेला से सांवत खेड़ा से चुहड़माजरा में 1468 ई. को आबाद हो गये, 968 ई. को राणा हर राय ने अमीन और उसके आस–पास 84 गावों की जागीर अपने पुत्र दीप चन्द चौहान को दी थी।

आर्केत्योलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया वर्ष 1871–72 भाग–4 पृ. 209–211 के अनुसार रोड़ वंश के शासकों से सम्बद्ध निश्चित पुरातात्विक सामग्री लगभग प्रथम ई. शताब्दी से मिलनी प्रारम्भ हो जाती है। जिसका स्पष्ट अर्थ यह लिया जा सकता है कि रोड़ वंश प्राचीन शासक वंश से सम्बद्ध है, और इसका उदगम राजपूत जाति से नहीं हुआ।

ट्राईब्ज एण्ड कास्ट आफ दी नारथ वैस्ट्रन प्रोविन्सीज एण्ड अवध बाई डब्लू क्रूक 1896 ई.पृ. 243 भारत की सर्वे रिर्पोट में लिखा है। कि सहारनपुर के रोड़ श्री कृष्ण जी के समय महाभारत के समय से सहारनपुर आये थे। इसी रिर्पोट में बिजनोर के रोड़ अपने आप को रामचन्द के समय त्रेता युग से मानते है। इसी रिर्पोट में बिजनौर के रोड़ आज से 500 वर्ष पहले अपने नेता मही चन्द के साथ फतेहपुर–पुण्डरी से आकर बिजनौर में आबाद हुये। विलियम क्रूक की रिर्पोट रोड़ वंश को महाभारत के समय से करनाल कैथल में आबाद मानती है। इसके पीछे एक कारण और भी है।

तमाम रोड़ वंशी गांवों में रोड़ों की जद्धी जायदादे है। जब कि हरियाणा में सैणी व कम्बोज आदि ने खरीद कर जमीन – जायदाद बनाई है।

रोड़ इतिहास पर लिखने वाले लेखकों को वीर रूरू के बारे कुछ लिखने से पहले क.मा मुंशी द्वारा लिखित महामुनि ग्रन्थ व भगवान परशुराम ग्रन्थ को ध्यान से पड़ना चाहिये। इन ग्रन्थों में परशुराम द्वितीय व वीर रूरू का कार्यकाल महाभारत से लगभग 80 वर्ष पहले का है। विलियम क्रूक, जगे भाट सुलतान सिंह व देश राज, दि स्टडी आफ इण्डियन ट्रेडीसन इण्डिया 1953 सिल्वर जुबली इसू तथा जर्नल आफ इण्डिया हिस्ट्री नं. 143 परशुराम विंषयांक आदि रिर्पोट इन दोनों पुस्तकों से मेल खाती है। भाटों द्वारा प्रदत सामग्री जो वीर रूरू से दद रोड़ 620 ई. तक 73 राजाओं की सूची है। वह भी उपरोक्त पुस्तकों व रिर्पोटों से मेल खाती है। जिनसें यह प्रमाणित होता हैं। कि वीर रूरू जो रोड; वंश के संस्थापक थें। अरूट जो अरोड़ वंश के संस्थापक थे इनका कार्यकाल महाभारत से 80 वर्ष पूर्व का है अर्थात् 3182 ई. पूर्व वीर रूरू का जन्म हुआ जो आज से लगभग 3182+2002 = 5182 ई. वर्ष पहले हुआ।

17वीं शताब्दी में जयपुर पर रोड़ वंश के शासक जयसिंह का राज था, जो मथुरा–आगरा तक फैला हुआ था। महाराजा जयसिंह के राज्य में आगरा में तेजोमहाल्य नामक प्राचीन शिव मन्दिर था। जिसे बाद में बादशाह शाहजहाँ ने ताज महल में बदल दिया। इनके बाद इनके पुत्र ईश्वरी सिंह रोड़ गद्धी पर बैठे। पुर्णजानकारी के लिये पढ़े इसी पुस्तक का अध्याय तीन। 1747 ई. को शासक ईश्वरी सिंह ने अहमद शाह अवदाली को सतलूज दरिया के किनारे पर हरा कर वापिस अरब भागने को मजबूर कर दिया था। ईश्वरी सिंह की सेना के मुख्य सेनापति ये थे। हेमराज रोड़ गांव बसतली निरंजन रोड़ गांव अहर, गढ़मल रोड़ गांव मुन्दड़ी बीक्रम रोड़ गांव कौल, दीप चन्द रोड़ गांव सांच, बरीसाल रोड़ गांव रसीना। इस सेना में गांव जडोला के काफी जवान थे।

अध्याय-1

1.1 रोड़ वंश में (i) सूर्य वंश (ii) चन्द्र वशं (iii) चौहान वशं का होना। पुर्ण जानकारी के लिये इसी पुस्तक का अध्याय नं॰ 1 से 2 पढ़िये। रोड़ वशं में कोन गोत्र सूर्य वंशी है। कोन गोत्र चन्द्र वंशी हैं। कोन गोत्र चौहान वंशी हैं। इस पुस्तक के अध्याय में सभी गोत्रों की गद्धीयां दी गई हैं। उन गद्धियों के आधर पर ही सूर्य वंशी, चन्द्र वंशी व चौहान वंशी हैं।

(1) **चन्द्र वंशी** :– यह प्रमाणित हो चुका है कि शान्तनु सरदार महाबाहु व बालिका तीनों राजा प्रतीप के पुत्र हैं। इसी प्रकार शान्तनु के पुत्र भीष्म, सरदार महाबाहु के पुत्र रूरू जो रोड़ वंश के संस्थापक हैं। बालिका के पुत्र, अरूट जो अरोड़ वंश के संस्थापक हें। ये तीनों चचेरे भाई हैं। ये सभी चन्द्र वंशी हैं। रोड़ गोत्रों में जयपुर गद्धी उदयपुर गद्धी, गईमत्य गद्धी, अजमेर गद्धी ये सभी गद्धियां चन्द्र वंशियों की है।

(2) **सूर्य वंश** :– राम लाल मनियाल, रोड़ जाति का इतिहास पृ. 32 पर लिखता हैं कि अहीनिक की सस्न्तान लड़की थी। राजा अहीनिक ने अपने दामाद सूर्य वंशी को गद्धी पर बिठाया। चौ. मान सिंह रोड़ लाखनौर ने भी अपनी सहमती इस बात पर जताई है। कि राजा अहिनक की सन्तान लड़की थी। उनका दामाद सूर्य वंशी गद्धी पर बैठा। यह बिल्कुल ठीक हैं। लेकिन यह अहिनक त्रेता युग के समय का अहिनक नही हैं। क्योंकि उस समय चन्द्र वंश की उत्पत्ति नही हुई थी। यह अहिनक कलयुग के समय का है जो रूरू से बहुत बाद में हुआ। त्रेतायुग में जो सूर्य वंश की सुची हैं। उसके अनुसार रूरू से अहिनक तीन पीढ़ियां पहले पैदा हुआ तब तो रोड़ वंश के संस्थापक रूरू भी पैदा नही हुये थे। यह अहीनक कलयुग में रूरू से बहुत बाद में पैदा हुआ। इन्ही से सूर्य वंश ही उत्पत्ति हुई। अर्थात् रूरू से अहिनक तक के राजा चन्द्र वंशी हैं। अहिनक के बाद सूर्य वंश

आरम्भ हुआ। त्रेतायुग के आरम्भ से द्वापर युग के आरवीर के मध्य का समय अर्थात दोनों युगों के मध्य का समय 216000 वर्ष हैं। अर्थात् त्रेता युग का रूरू जो द्वापर – कलयुग के सन्धि काल में रूरू पैदा हुआ उससे 216000 वर्ष पहले पैदा हुआ। अर्थात् दोनों रूरूओं के मध्य का समय उपरोक्त है। जब की रोड़ों का प्रमाणित इतिहास 5000 वर्ष का ही उपलब्ध हैं। चन्द्र वंशी रूरू से अहीनक 36 पीढ़ी गुजरने पर हुआ। अहिनक का दामाद सूर्यवंशी था। रोड़ गोत्रों में अयोध्या की गद्धी सूर्य वंशीयों की हैं।

(3) **चौहान वंश** : रोड़ वंश के चन्द्र वंश में राणा हर राय हुआ रोड़ों में उन्ही के नाम से राणा गोत्र हैं। राणा हर राय की पत्नी गांव मुहाणा से महला गोत्र की थी। उनसे दीप चन्द का जन्म हुआ। माऊण्ट आबु पर भारत की रक्षा करने के लिये जिन चार वीरों को अग्नि (यज्ञ) के सामने बिठा कर देश की रक्षा करने की स्पथ दिलवाई थी। उनमें दीपचन्द भी था। जिनसे दीप चन्द चौहान के नाम से चौहान वंश तथा दलपत्ते (सेनापति) गोत्र हुआ। राणा हर राय नें 968 ई. को अपने पुत्र दीप चन्द चौहान को अमीन व उसके आस–पास 84 गांवों की जागीर दी थी। यहां रोड़ों में चौहान वंश भी हैं।

1.2 **जाति** :– संसार में आर्य, द्राविड़, हब्शी और मंगोल चार जातिय हैं।

1. **आर्य** : पुराने रिकार्ड अनुसार भारत से अमेरिका तक 56 देशों में आर्य जाति निवाश करती हैं।
2. **द्राविड़** : दक्षिणी भारत में द्राविड़ जाति निवास करती है।
3. **हब्शी** : अफ्रीका के 36 देशों में हब्शी जाति निवास करती है।
4. **मंगोल** : चीन, मंगोलिया, तिब्बत आदि 9 देशों में मंगोल जाति निवास करती है।

नोट : जाति के मुराद नशल से हैं। वह आर्य जैसे रंग, रूप, कद का व्यक्ति हैं। उसकी जाति आर्य हैं।

1.3 आर्य जाति के 36 वंश

आरम्भ में आर्य जाति के सूर्य वंश और चन्द्र वंश दो वंश ही थे। बाद में ये बढते–बढ़ते 36 वंश तक पहुँच गये। कुछ अज्ञानी पुरूष इन्हें 36 जातियां भी कहते हैं। जो गलत है।

सूर्यवंश से उत्पत्ति	=	10 वंश
चन्द्र वंश से उत्पत्ति	=	10 वंश
ऋषियों से उत्पत्ति	=	12 वंश
यज्ञों से (अग्नि) से उत्पत्ति	=	04 वंश
आर्य जाति से कुल वंश	=	36 वंश

1.4 रोड़ शब्द की उत्पत्ति

1. श्री वमन शिव राम आपटे द्वारा लिखित संस्कृत–हिन्दी शब्द कोश के पृष्ठ 860 पर 'रूढ़' शब्द को विस्तृत रूप से स्पष्ट किया गया हैं। रोड़ शब्द की उत्पत्ति रूढ़ शब्द से हुई है। इस शब्द कोश में रूढ़ शब्द का अर्थ समझाते हुये लिखा है कि उगा हुआ, उठा हुआ, चढ़ा हुआ, फैला हुआ विदित, ज्ञात, व्यापक, सभी लोगों द्वारा मान्य, सर्वप्रिय प्रसिद्ध सवार। रूढ़ शब्द रूढ़ धातु से बना हुआ है। रूह का अर्थ है। उँचाई, वृद्धि, विकास, रूढ़ वंश का अर्थ उँचा कुल।
2. चारूदेव शास्त्री ने रूढ़ शब्द को रोढ़ शब्द में प्रयोग किया है।
3. श्री सुमित्रा मंगेश कात्रे ने भी पाणिनी शब्द कोश में रूहा का अर्थ उच्च शिखर तक उठना, विकास, वृद्धि या बढ़ोतरी लिखा है।
4. श्री माइनर विलियम ने रूढ़ शब्द से रूढ़ा बना जिसका अर्थ ये है। उगा हुआ, उन्नत हुआ, बहुत बड़ा, महान, ऊँचा, नेक, चारों तरफ फैला हुआ, दूर–दूर तक जाना जाने वाला, प्रसिद्ध लोकप्रिय ।
5. एटोमोलोजी–एपलाइड टू नेमज आफ वैरियर ट्राईब्ज में भी रूढ़ शब्द से वृद्धि, ऊँचाई, विकास या बढ़ोतरी ही स्पष्ट अर्थ है।

6. श्री बाल कृष्ण ने आगे लिखा है। दिशि रूढ़श्यः किम ऐन्द्रया वसति। रूढ़ का अर्थ– काल वाचक, देश वाचक, इन्द्र देवता के रूप में प्रयोग होता है। अर्थात काल के समान शत्रु का विनाश करने वाला। देश के समान विशाल इन्द्र देवता के समान शत्रुओं को जीतने वाला।

7. ऊपर रूढ़ शब्द का अर्थ खोलकर लिखा है । चारूदेव शास्त्री ने व्याकरण महाभाष्य के पृ॰ 249, 253, 739 पर रू के स्थान पर रो शब्द का प्रयोग किया है, जिसके कारण रूढ़ शब्द को रोढ़ लिख कर रोड़ वंश जिसका शब्दार्थ ऊँचा कुल व योद्धाओं का कुल है जो ठीक है ।

वर्ण व्यवस्था

आर्य जाति ने कार्य के आधार पर अपने समाज को चार वर्णों में बाँट रखा था जो पैत्रीक नहीं थी । वेदों के आधार पर जिनकी परिभाषा निम्नलिखित है ।

1. ब्राह्मण या पण्डित :–जो विद्वान अज्ञानता के खिलाफ लड़ेगा। वही ब्राह्मण कहलाया जायेगा ।
2. क्षत्रिय :–जो व्यक्ति अन्याय के खिलाफ लड़ेगा और राष्ट्र को सबसे ऊपर समझेगा वही क्षत्रिय कहलाया जायेगा।
3. वैश्य :–जो व्यक्ति अभाव के खिलाफ लड़ेगा और प्रत्येक वस्तु की पूर्ति बिना किसी देरी से करेगा वैश्य कहलाया जायेगा।
4. शुद्र :–जब वेतन के लिए दूसरे की सेवा में लगा है । तब वह शुद्र कहलायेगा ।

सृष्टि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में ऋग्वेद में 6–7 सुक्त हैं । ऋक सुक्त संग्रह में क्रमांक नं॰ 22 पुरुष सुक्त हैं । जिनके तदनुसार सृष्टि की मूल रूप से रचना करने वाला पुरुष है ।

1.5 सूर्य वंश की उत्पत्ति

सूर्यवंश क्षत्रियों के छत्तीस वंशों में प्रथम स्थान पर हैं । इसकी उत्पत्ति महापुरुष विवस्वान (सूर्य) से मानी जाती है। मरीची के पुत्र कश्यप हुए ।

कश्यप की रानी अदिति से सूर्य की उत्पत्ति हुई जिसको विवस्वान भी कहा जाता है । सूर्य वंश को इक्ष्वाकु वंश भी कहा जाता है ।

आधार विष्णु पुराण व ब्राह्म पुराण

1.	राजा मरीची	2.	राजा कश्यप
3.	राजा सूर्य	4.	राजा मनु
5.	राजा इक्ष्वाकु		

राजा इक्ष्वाकु से राजा दशरथ तक 57. राजाओं की सूची उपलब्ध नहीं हो सकी ।

62.	राजा दशरथ	63.	राजा राम
64.	राजा कुश	65.	राजा अतिथि
66.	राजा निष्पद	67.	राजा अनल
68.	राजा रभ	69.	राजा पुण्डरिक
70.	राजा क्षेमधनवा	71.	राजा देवानिक
72.	राजा अहिनक	73.	राजा सुधनवा
74.	राजा रूरू त्रेता के रूरू से रोड़ वंश का कोई सम्बन्ध नहीं है।		
75.	राजा परिपात्रक	76.	राजा देवल
77.	राजा वच्चल	78.	राजा उत्क्षक
79.	राजा ब्रजराम	80.	राजा शंडण
81.	राजा पुतिताक्ष	82.	राजा विश्वसह
83.	राजा हिरण्य	84.	राजा पुष्प
85.	राजा ध्रुवसन्धि	86.	राजा शुवसन्धिका
87.	राजा सुदर्शन	88.	राजा अग्निवर्ण
89.	राजा सुघोष	90.	राजा शिघ्रग
91.	राजा मरू	92.	राजा प्रषुश्रुत
93.	राजा सुसन्धि	94.	राजा अमर्ष
95.	राजा सहस्वान	96.	राजा विश्वभव
97.	राजा बृहवल	98.	राजा ब्रहदबल
99.	राजा बृहदक्षण	100.	राजा उरूक्रम

101.	राजा वत्सवृद्ध	102.	राजा प्रतिव्योम
103.	राजा मानू	104.	राजा दिवाकर
105.	राजा सहदेव	106.	राजा बृहदख
107.	राजा मानुमान	108.	राजा प्रतिकारव
109.	राजा सुप्रतिक	110.	राजा मरूदेव
111.	राजा सुक्षत्रा	112.	राजा पुष्कर
113.	राजा सुपता	114.	राजा अभित्रजीत
115.	राजा बृहदराज	116.	राज बांई
117.	राजा कृत्यजंय	118.	राजा रणउजय,
119.	राज संजय	120.	राजा शाक्य
121.	राजा शुद्धहोद	122.	राजा लागत
123.	राजा प्रशनजीत	124.	राजा शुद्रक
125.	राजा रणक	126.	राजा सुरघ
127.	राजा सुमित्र	128.	राजा महारथी
129.	राजा अतिरथी	130.	राजा अचलसेन
131.	राजा कनकसेन	132.	राजा महामदनसेन
133.	राजा सुदन्त	134.	राजा विजय
135.	राजा पद्रमादित्य	136.	राजा शिवदित्य
137.	राजा हरदित्य	138.	राजा सूर्यदित्य
139.	राजा सोमादित्य	140.	राजा शिलदित्य
141.	राजा दुनशल	142.	राजा सेनपाल
143.	राजा खेमराज	144.	राजा विर्सव
145.	राजा सूरीन	146.	राजा शीर्ष
147.	राजा बप्पा	148.	राजा अहंममाल

रूरू :

रोड़ हतिहास को प्रमाणित करने के लिये लगभग पांच हजार वर्ष पुराने अर्थात महाभारत के समय तक ही सबूत प्रमाण या सन्दर्भ उपलब्ध हुये हैं जो द्वापर युग तक पहुंचते है। त्रेता युग के रूरू तक पहुँचने के लिए

त्रेता युग का समय 1296000 वर्ष+द्वापर युग का समय 864000 वर्ष+कलयुग 5000 वर्ष अर्थात् त्रेता युग के सूर्यवंशी रूरू तक पहुचने के लिए 2165000 वर्ष का इतिहास चाहिये जो उपलब्ध नही है।

1.6 ऋषियों से 12 वंश

कोसिक वंश, भारद्वाज वंश, भृग वंश, दीक्षित वंश, गौत्तम वंश, जमदग्नि वंश, दधिचि वंश, पराशर वंश, अत्रि वंश, शांडिल्य वंश, अंगिरस वंश, व्यास वंश आदि।

अग्नि से चार वंश

परमार वंश, चौहान वंश, चालुक्य वंश, प्रतिहार वंश

चन्द्र वंश की उत्पत्ति

1.7 चन्द्र वंशीय क्षत्रिय ब्रह्मा के दूसरे पुत्र अत्रि की सन्तान है। महार्षि अत्री की धर्मपत्नी अनुसुय्या का ज्येष्ठ पुत्र सोम था। सोम को ही चन्द्र कहते हैं। इनहीं के नाम से चन्द्र वंश की उत्पत्ति हुई।

आधार आचार्य राम देव, भारतवर्ष का इतिहास व महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ–286

1.	राजा अत्रि		
2.	राजा सोम–चन्द्र वंश का संस्थापक		
3.	राजा बुध	4.	पुरूखा – काश्य वंश की उत्पत्ति
5.	राजा आयु,	6.	नहुष
7.	राजा ययाति	8.	राजा पुरु–पुरू वंश की उत्पत्ति
9.	राजा जनमेजय	10.	राजा प्राचीनवान
11.	राजा प्रवीर	12.	राजा मनस्यू
13.	राजा अभय पद	14.	राजा सुद्यु
15.	राजा बहुगत	16.	राजा संयाती

17. राजा अंहयाती
18. राजा शैद्राश्व
19. राजा ऋतेयु
20. राजा मत्तार
21. राजा तमु
22. राजा ऐलीन
23. राजा दुष्यन्त (दुरदान)
24. राजा भरत–भरत से इस देश का नाम भारत रखा
25. राजा मन्यु
26. राजा बृहक्षत्र
27. राजा सुहोत्र
28. राजा हस्ती–इन्होंने हस्तिनापुर बसाया था
29. राजा अजमीढ़
30. राजा ऋक्ष
31. राजा संवरण
32. राजा कुरू–कुरुक्षेत्र के संस्थापक। राजा कुरु से ही कुरू वंश की उत्पत्ति हुई।
33. राजा जन्हू,
34. राजा जनमेजय
35. राजा सुरथ
36. राजा विदुरथ
37. राजा सर्वभौभ
38. राजा जयत्सेन
39. राजा अराधित
40. राजा आयुतायु
41. राजा अक्रोधन
42. राजा देवतिथि
43. राजा ऋक्ष
44. राजा भीमसेन
45. राजा दीलीप
46. राजा प्रतीप–राजा प्रतीप के तीन पुत्र थे।
47. राजा शान्तनु
47. सरदार महाबाहु
47. राजा बालिका
48. राजा विचित्रविर्थ
48. वीर रूरू
48. अरूट

नोट : क) सरदार महाबाहु के ज्येष्ठ पुत्र रूरू थे। जिससे रोड़ वंश की उत्पत्ति हुई।

ख) राजा बालिका के ज्येष्ठ पुत्र अरूट थे। जिससे अरोड़ा वंश की उत्पत्ति हुई।

49. राजा पांडु :

महाराजा युधिष्टिर से राजा यशपाल तक 173 राजाओं ने 4157 वर्ष 9 मास 14 दिन राज किया।

क्र.	नाम	वर्ष	मास	दिन
50.	राजा युधिष्ठिर	36	8	15
51.	राजा परिक्षित	60	–	–
52.	राजा जनमेजय	84	7	23
53.	राजा अश्वमेद्य	82	8	22
54.	राजा द्वितीय राम	88	2	8
55.	राजा छत्रपाल	75	10	14
56.	राजा चित्ररथ	75	3	18
57.	राजा दुष्टशैल्य	75	10	14
58.	राजा उग्रसेन	78		21
59.	राजा शूरसेन	78	7	21
60.	राजा भुवनपती	69	5	5
61.	राजा रणजीत	65	10	4
62.	राजा ऋक्षक	64	7	4
63.	राणा सुखदेव	62	0	24
64.	राजा नरहरिदेव	51	10	2
65.	राजा सुचीरथ	42	11	2
66.	राजा शूरसेन	58	10	8
67.	राजा पर्वतसेन	55	8	10
68.	राजा मैद्यावी	52	10	10
69.	राजा सोनचीर	50	8	21
70.	राजा भीमदेव	47	9	20
71.	राजा नृहरिदेव	45	11	23
72.	राजा पुर्णमल	44	8	7
73.	राजा करदवी	44	10	8
74.	राजा अलमिक	50	11	8

क्र.	नाम	वर्ष	मास	दिन
75.	राजा उदयपाल	38	9	0
76.	राजा दुवनमल	40	10	26
77.	राजा दमात	32	0	0
78.	राजा भीमपाल	58	5	8
79.	राजा क्षेमक	48	11	21
80.	राजा विश्रवा	17	3	29
81.	राजा पुरसैनी	42	8	21
82.	राजा बीसेनी	52	10	7
83.	राजा अन्डगशायी	47	8	23
84.	राजा हरिजित	35	9	17
85.	राजा परमसेनी	44	2	23
86.	राजा सुखपाताल	30	2	21
87.	राजा कद्रूत	42	9	24
88.	राजा सज्ज	32	2	14
89.	राजा अमरचूड़	27	3	16
90.	राजा अमीपाल	22	11	25
91.	राजा दशरथ	25	4	12
92.	राजा बीरसाल	31	8	11
93.	राजा बीरसालसेन	47	0	14
94.	राजा वीर महा	35	10	8
95.	राजा अजीत सिंह	27	7	19
96.	राजा सर्वदत्त	28	3	10
97.	राजा भूवतपती	15	4	10
98.	राजा बीरसेन	21	2	13
99.	राजा महीपाल	40	8	7
100.	राजा शत्रुशाल	26	4	3
101.	राजा संघराज	17	2	10
102.	राजा तेजपाल	28	11	10

क्र.	नाम	वर्ष	मास	दिन
103.	राजा मणिक चन्द	37	7	21
104.	राजा कामसेनी	42	5	10
105.	राजा शत्रुमर्दन	8	11	13
106.	राजा जीवनलोक	28	9	17
107.	राजा हरिराव	26	10	29
108.	राजा वीरसेन	35	2	20
109.	वर्ष राजा अदित्यकेतु	23	11	13
110.	राजा धन्धर	42	7	14
111.	राजा महार्षि	41	2	29
112.	राजा सनरच्ची	50	10	19
113.	राजा महायुद्ध	30	3	8
114.	राजा दुरनाथ	28	5	25
115.	राजा जीवन राज	45	2	5
116.	रूद्रसेन	47	4	28
117.	राजा आरौंलक	42	10	8
118.	राजा राजपाल	36	0	0
119.	राजा महानपाल	14	0	0
120.	राजा विक्रमादित्य	93	0	0
121.	राजा समुद्रपाल	54	2	20
122.	राजा चनद्रपाल	36	5	4
123.	राजा सहायपाल	11	4	11
124.	राजा देवपाल	27	1	28
125.	राजा नर सिंह पाल	18	0	20
126.	राजा सामपाल	27	1	17
129.	राजा अमृतपाल	36	10	13
130.	राजा बलीपाल	12	5	27
131.	राजा महीपाल	13	8	4
132.	राजा हरीपाल	14	8	4

क्र.	नाम	वर्ष	मास	दिन
133.	राजा सीसपाल	11	10	13
134.	राजा मदनपाल	17	10	19
135.	राजा कर्मपाल	16	2	2
136.	राजा विक्रम पाल	24	11	13
137.	राजा मुलखचन्द	54	2	10
138.	राजा विक्रम चन्द	12	7	12
139.	राजा अमीरचन्द	10	0	5
140.	राजा राम चन्द्र	13	11	8
141.	राजा हरीचन्द	14	9	14
142.	राजा कल्याण चन्द	10	5	4
143.	राजा भीम चन्द	16	2	9
144.	राजा लोव चन्द	16	3	22
145.	राजा गोविन्द चन्द	31	7	12
146.	राजानी पदमावती	1	0	0
147.	राजा हरिप्रेम	7	5	16
148.	राजा गोविन्द प्रेम	20	2	8
149.	राजा गोपाल प्रेमक	15	7	28
150.	राजा महाबाहु	6	8	29
151.	राजा आधीसेन	18	5	21
152.	राजा विलावलसेन	12	4	2
153.	राजा केशवसेन	15	7	12
154.	राजा माद्यसेन	12	4	2
155.	राजा मयूरसेन	20	11	27
156.	राजा भीमसेन	5	10	9
157.	राजा कल्याण सेन	4	8	21
158.	राजा हरीसेन	13	0	25
159.	राजा क्षेमसेन	8	11	15
160.	राजा नरायणसेन	2	2	29

क्र.	नाम	वर्ष	मास	दिन
161.	राजा लक्ष्मीसेन	26	10	0
162.	राजा दामोदरसेन	11	5	19
163.	राजा दी सिंह	17	1	16
164.	राजा राज सिंह	14	5	0
165.	राजा रण सिंह	9	8	11
166.	राजा नर सिंह	45	0	15
167.	राजा हरी सिंह	13	2	29
168.	राजा जीवन सिंह (अनंग पाल)	18	0	1
169.	राजा पृथ्वी राज चौहान	12	2	19
170.	राजा अभ्यपाल चौहान	14	5	17
171.	राजा दुर्जन पाल चौहान	11	4	14
172.	राजा उदय पाल चौहान	11	7	3
173.	राजा यश पाल चौहान	36	4	27

1265 ई. तक राज किया।

द्वापर का आखरी व कलयुग का सबसे पहला राजा परिक्षित जो अभिमन्यु का पुत्र व अर्जून का पौत्त था। राजा युधिष्ठिर से राजा यशपाल चौहान 1265 ई. तक चन्द्रवंशियों ने 4157 वर्ष 9 मास 14 दिन राज किया। 1265 ई. से 2002 ई. तक का समय जोड़ने पर 4894 वर्ष हुये। राजा पाण्डू और विचित्रविर्य का शासन काल इसमें जोड़ा नही गया जिसे जोड़ने पर लगभग 5000 वर्ष पहले वीर रूरू का समय निकल आयेगा।

भाटों द्वारा प्रदत्त सामग्री के अनुसार इलाहाबाद के शासक यपाति के वंशज दुरदान (दुष्यन्त) से 26 पीढ़िया गुजरनें पर रोड़ वंश के संस्थापक रूरू हुये। भाटों की यह रिर्पोट चन्द्रवशी शासकों क्र. सं. 7 ययाति क्र. सं. 23 दुष्यन्त क्र. सं. 48 राजा रूरू से बिल्कुल मेल खाती हैं।

दि स्टडी आफ इण्डियन ट्रेडीसन इण्डिया 1953 सिल्वर जुबली इसू तथा जर्नल आफ इण्डियया हिस्ट्री नं. 143 परशुराम विषयांक के अनुसार आज से पांच हजार वर्ष पहले एक जंगल में लड़ने के लिये कुछ रोड़ों को ललकारा लेकिन उन्होनं यह कहकर की हम रोड़ (योद्धा) नहीं है। लड़ने से इन्कार कर दिया था। यह घटना भी इसी रूरू की तरफ संकेत करती हैं।

क. मा. मुंशी द्वारा लिखित महामुनि ग्रन्थ व भगवान परशुराम ग्रन्थ जिसमें रूरू की परशुराम ।। के साथ विस्तृत लड़ाइयों का वर्णन हैं। जिसमें रूरू को शान्तनु के भाई सरदार महाबाहु का पुत्र रूरू दर्शाया गया है। यह घटना भी इसी चन्द्र वंशी द्वापर युग के रूरू की तरफ संकेत करती है।

बराह मिहिर की वृहत संहिता के हिसाब से अब यह 5102 वर्ष पुराना हो गया है। इसे पाण्डव व कलयुग सम्वत भी कहते हैं। यह अंग्रेजी वर्ष के समान चलता हैं।

1.8 चन्द्र वंश से 10 कुलों की उत्पत्ति :–

1. **काश्य वंश** : यह चन्द्र वंश की ही उपशाखा हैं। जिसका आदि पुरुष पुरूरवा था पुरूरवा, आयु, छत्रवृद्ध, सुहोत्र, काश्य, काशेय, राष्ट्र, दीर्घतया, धनवन्तरि (प्रसिद्ध वैद्य) केतुमान, भीम रथ, दीवोदास, प्रतर्दन, अर्लक, सन्नति, सुनीथ, सुकेत, धर्मकेतु, सत्यकेतु विभु, सुविभु, शुकुमार, घृष्टकेतु, वीतिहोत्र, भार्ग, भार्ग भूमि विष्णु पुराण 2/4/8/1–21 के मुताबिक 26 पीढ़ियां हुई।

2. **दुर्वसु वंश** :– महाराजा ययाति के पुत्र दुर्वसु से दुर्वसु वंश, द्रहनु से द्रहनु वंश तथा अनुवंश आदि हुये। दुर्वसु, वहीं, भार्ग, भानू, त्रयीमान, मरूत (सन्तानहीनगया)

3. **यदुवंश** :– यह वंश चन्द्र वंश की सबसे बड़ी शाखा हैं। यदु वंश भगवान श्री कृष्ण की वंशावली हैं। यदु, क्रोष्ठ, बजिनवान, स्वाही, रूशेकु, चित्ररथ, शशिबिदू, पृथश्रवा रूचक, ज्यामघ, विदर्भ, कृथ,

कुन्ति, घृष्ठि, निवृति, दशाही व्योम, भीमूथ, विकृति, भीमरथ, नवरथ, दशरथ, करम्भि, देवशत, दवेश्रत, मधु, अनु, पुरूहोत्र, आयु, सात्वत, वृर्ष्णि, चित्रथ, विदुरथ, सुरसेन, वासुदेव, श्री कृष्ण, द्रघुमन, बज्र, प्रतिबाहु, सुचारू, चालीस पीढ़िया हुई।

4. **हैहय वंश** :– हैहय वंश चन्द्र वंश की शाखा है। धर्मनेत्र, कुन्ति, सहजित, महिस्मान, भद्रश्रेष्य, दुर्दम, घनक, कृत वीर्य, सहस्त्रार्जुन सहस्त्राजुर्न का सेनापति रोड़ वंश के संस्थापक वीर रुरू थे ।

5. **पुरू वंश** :– यह वंश महाराजा ययति के वंशज पुरू का हैं।

6. **पांचाल वंश** :– महाराजा हस्ति के तीन पुत्र अजमीढ़, ढ़िजमीढ़, पुरमीढ़ थें। जिनसे तीन वंशों की उत्पत्ति हुई। अजमीढ़, नील, शान्ति, शुशन्ति, पुरंजय, ऋक्ष, ध्र्यश्व, मृदगल, बृहदस्व, देवादास, भित्रायु, च्यवन, सुदास, सोदास, सहदेव, शौमक, पृषक, द्रुपद (अर्जुन का साला) घृष्टकेतु।

7. **कुरू वंश** :– कुरु वंशज चन्द्रवंशी क्षत्रिय कहलाये। कुरु, जन्हू, सुघनू, सुहोत्र, चयवन, कृतक, वसु, ब्रहदर्थ, जरासंघ

8. **रोड़ वंश** :– राजा प्रतीप के तीन पुत्र शान्तनु, सरदार महाबाहु, राजा बालिका थे। सरदार महाबाहु के पुत्र रूरू से रोड़ वंश, राजा बालिका के पुत्र अरूट से अरोड़ वंश की उत्पत्ति हुई। प्रतीप, सरदार महाबाहु, रूरू, राजा तालम देव, बत्रीहोत्र, सहदेव, परूरिख आदि अहीनक तक 37 राजा चन्द्रवंशी हुये। अहीनक की सन्तान लड़की थी। सूर्यवंशी दामाद गद्धी पर बैठा अहीनक के बाद सूर्य वंश हुआ।

सन्दर्भ

1.1 महर्षि दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश, पृ॰ 286
–कन्मा॰ मुंशी भगवान परशुराम ग्रन्थ, महामुनि ग्रन्थ
–दि स्टडी ऑफ इण्डियन ट्रेडीसन इण्डिया 1953 सिल्वर जुबली इसू तथा जर्नल ऑफ इण्डिया हिस्ट्री नं॰ 143 परशुराम विषयांक
–राम लाल मनियाल रोड़ जाति का इतिहास, पृ॰ 35 से 38
–विष्णु पुराण व ब्रह्म पुराण
–जगे भाट सुलतान सिंह व देश राज कृत रोड़ इतिहास से

1.2 स्वामी विवेकानन्द, जाति–संस्कृति–समाजवाद

1.4 श्री वमन शिव राम संस्कृत, हिन्दी शब्द कोश, पृ॰ 860
–श्री सुमित्रा मंगेश कात्रे पाणिनी शब्द कोश, पृ॰ 465
–श्री माइनर विलियम संस्कृत अंग्रेजी शब्द कोश, पृ॰ 885
–व्याकर्णचार्य श्री बाल कृष्ण पण्चोली व्याकरण सिद्धान्त कौमुदी, पृ॰ 336

1.5 स्वामी विवेकानन्द, जाति–संस्कृति–समाजवाद, पृ॰ 1

1.6 विष्णु पुराण व ब्रह्म पुराण

1.7 आचार्य रामदेव भारत वर्ष का इतिहास-
–क्रन्मा॰ मुंशी, महामुनि ग्रन्थ व भगवान परशुराम ग्रन्थ
–महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश, पृ॰ 286

1.8 विष्णु पुराण, 2/4/8/1–21
–विष्णु पुराण, 4/7/1–5
–विष्णु पुराण, 4/11/1–30
–महामुनि ग्रन्थ, भगवान परशुराम ग्रन्थ
–पद्मपुराण
–राम दास रोड़, आर्य वीर रुरू से

अध्याय 2

2.1 रोड़ वंश 3182 ई. पूर्व से 620 ई. तक

राजा प्रतीप के तीन पुत्र शान्तनु, सरदार महाबाहु व राजा बालिका थे। रोड़ वंश के संस्थापक सरदार महाबाहु के ज्येष्ठ पुत्र रूरू थे। वह चन्द्र वंश के आर्य राजाओं की वंश वृक्षावली का 48वां राजा था। कं. मां. मुशी द्वारा लिखित भगवान परशुराम ग्रन्थ व महामुनि ग्रन्थ के अनुसार महाभारत से लगभव 80 वर्ष पहले अनूप देश (मध्य प्रदेश–गुजरात) के शासक सहस्त्रार्जुन की सेना में भर्ती हुआ। उन्ति कर–कर सेनापती तक पहुँचा। चर्मणमति (चम्बल) का राज्य स्थापित किया जो ग्वलियर–आगरा तक फैला हुआ था।

2.2 रोड़ वंशावली :–

1. राजा अत्रि
2. राजा सोम–चन्द्र वंश की उत्पत्ति हुई।
3. राजा बुध
4. राजा पुरूख–काश्य वंश की उत्पत्ति।
5. राजा आयु
6. राजा नहुष
7. राजा ययाति
8. राजा पुरू – पुरू वंश की उत्पत्ति।
9. राजा जनभेजय
10. राजा प्राचीनवान
11. राजा प्रवीर
12. राजा मनस्यू
13. राजा अभयपद
14. राजा सुधु
15. राजा बहुगत
16. राजा संयाति
17. राजा अहंयाति
18. राजा शैद्राश्व
19. राजा ऋतेयु
20. राजा भत्नार
21. राज तसु
22. राजा ऐलीन
23. राजा दुष्यन्त (दुरदान)
24. राजा भरत–इनके नाम से 'भारत देश' नाम रखा गया।
25. राजा मन्यु
26. राज बृहक्षत्र
27. राजा सुहोत्र

28. राजा हस्ती–इन्होंने हस्तिनापुर बसाया था।
29. राजा अजमीढ़ 30. राजा ऋक्ष
31. राजा संवरण
32. राजा कुरु – कुरु वंश की उत्पत्ति व कुरुक्षेत्रा के संस्थापक थे।
33. राजा जन्हू 34. राजा जनमेजय
35. राजा सुरथ 36. राजा विदुरथ
37. राजा सर्वभौम 38. राजा जयत्सेन
39. राजा अराधित 40. राजा आयुतथु
41. राजा अक्रोधन 42. राजा देवतिथि
43. राजा ऋक्ष 44. राजा भीमसेन
45. राजा दीलीप 46. राजा प्रतीप

47. **राजा शान्तनु : सरदार महाबाहु : बालिका** सरदार महाबाहु के ज्येष्ठ पुत्र रूरू रोड़ वंश के संस्थापक थे। महाभारत से लगभग 80 वर्ष पुर्व ही रोड़ वंश कुरू वंश से अलग हुआ। बालिका के पुत्र अरूट जो अरोड़ वंश के संस्थापक थे।

2.2 भाटों द्वारा प्रदत्त साम्रग्री के अनुसार इलाहाबाद के शासक यंयाति के वंशज दुरदान (दुष्यन्त) से 26 पीढ़ियां गुजरनें पर रोड़ वंश के संस्थापक राजा रूरू हुये। नीचे राजा रूरू से आगे रोड़ वंश की 73 चौंकड़िया पीढ़ियों का वर्णन किया गया है।

2.3 गांगेय द्वारा कांशी राज की तीन पुत्रियों का अपहरण

विचित्रवीर्य का स्वास्थ्य कमजोर था। वह शस्त्र चलाने में भी निपुण नहीं था। दोनों भाई चित्रागंद व विचित्रवीर्य स्वभाव से चिड़चिड़े थे। कानाफूंसी से अन्य राजप्रासादों में भी यह समाचार पहुंच गया था कि उनकी माता का वंश कैसा है। इस लिये शान्तनु के दो लड़कों विचित्रवीय और चित्रागंद को कोई भी राजा अपनी लड़की देने को तैयार नहीं था। राजमाता को इस परिस्थिति ने घोर संकट में डाल दिया था। गांगेय ने इसके लिए एक हल निकाल ही लिया था।

कांशीराज अपनी तीन पुत्रियों अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका के स्वयम्वर की योजना बना रहा था। उसने सभी आर्य राजाओं को अपनी लड़कियों के स्वयम्बर के लिये निमंत्रण दे दिया था। राजा शान्तनु को इस निमंत्रण से वंचित रखा गया था। गांगेय सेना लेकर कांशी राज के राज्य से उसकी तीन लड़कियों का अपहरण कर लाये। बड़ी लड़की ने चित्रागंद व विचित्रवीर्य दोनों में से किसी एक को वर मानने से इन्कार कर दिया। दोनों छोटी लड़कियों की शादी चित्रागंद व विचित्रवीर्य से कर डाली।

अम्बा ने इन दोनों राजकुमारों को वर मानने से इन्कार कर दिया था। उसने कहा कि वह तो राजा शाल्व का वरण कर चुकी है। स्वयम्बर में वह उसे वरमाला पहनाने वाली थी पर गांगेय ने उसका अपरहण करके उनका जीवन नष्ट कर दिया है। इसलिये केवल गांगेय को ही वर मान सकती है। क्योंकि गांगेय उनको शक्ति से जीत कर लाया है। क्षत्रिय धर्म इसके लिये आज्ञा देता है। यह सुनकर गांगेय ने शाल्व के पास ऐसे भिजवा दिया। मानों वह कुरु कन्या हो, लेकिन शाल्व नरेश ने अम्बा के साथ शादी करने से इन्कार कर दिया। उसने कहा, कि इतने लोगों के सामने गांगेय ने उसे हराकर अम्बा को जीता है। वह भी क्षत्रिय है। अब भेंट रूप में वह उसे स्वीकार करे यह उचित नहीं है। अम्बा अत्यन्त क्रुद्ध होकर गांगेय के पास लौटी और उससे कहा कि तुम्हीं ने मेरा जीवन नष्ट किया है। अब तुम ही मुझ से विवाह कर के मेरा उद्धार कर सकते हो। गांगेय ने अम्बा की बातें बड़े ध्यान से सुनी फिर उसको समझाया कि मैंने विवाह न करने का व्रत लिया है। इसलिए उचित यही होगा कि तुम मेरे छोटे भाईयों में से किसी एक के साथ विवाह कर लें या फिर कोई दूसरा पति ढूंढ ले। वह इस बात पर बिल्कुल सहमत नहीं थीं। उसने कहा कि या तो गांगेय का विवाह उसके साथ कर दिया जाये अन्यथा फिर गांगेय को धरती पर जीवित देखना कठिन होगा। गांगेय तुमने जो हम तीन बहनों का शक्ति के जोर पर अपहरण किया है और फिर हमसे शादी न करके हमारे माता–पिता व हमारी आत्मा को सताया है। इस भयंकर संकट का सामना आपको व आपके परिवार को करना ही होगा। मैं शपथ लेती हूं कि मैं आपके इसी जीवन में

आपसे बदला अवश्य लूंगी चाहे मुझे दुबारा जन्म लेना पड़े और उस समय तक आपको जीवित रहना ही पड़ेगा। 'औरत का पुत्रवती न होना ही उसके जीवन के लिए सबसे बड़ा श्राप है। इस श्राप के लिए गांगेय तुमने ही मुझे बाध्य किया है। क्षत्राणी का यही सबसे बड़ा धर्म है कि वह धरती माता की रक्षा के लिए योग्य वीर पुत्र को जन्म दे कर धरती माता के कर्ज से मुक्त हो सकती है।

उसने मांग की कि उसको उसके नाना होत्रवाहन के आश्रम में हिमालय भेज दिया जाये। ऋषि शैखावत के आश्रम में पहुंचते ही नाना व ऋषियों ने उसकी बातें सुनकर उसे समझाया कि वह अपनी हठ छोड़ दे। लेकिन अम्बा ने अपना अधिकार दिलाया जाने बारे सबको कहा। उसके बाद गांगेय को आश्रम में बुलाया गया।

अम्बा का कद ऊंचा था । बाल बिखरे हुए थे। जब उसने गांगेय को अपने नाना होत्रवाहन के पास बैठा हुआ देखा तो उस की मांसपेशियां तन गई और वह आवेग से कांपने लग गई । गांगेय के साथ उनकी माता सत्यवती भी थी। सिंहनी के समान क्रुद्ध आंखों से उसने गांगेय को यों देखा मानों उछल कर उस पर आक्रमण करने वाली है। इसके बाद वह सत्यवती की तरफ उंगली करके बोली 'यह चुड़ैल' है। यह दुष्टा है। भगवान मेरा वश चले तो इसकी आंख निकाल लूं। तूं ही मेरे मार्ग में बाधा बनी है। अम्बा ने चीखकर कहा मैं सब जानती हूं। तूंने जब शान्तनु से विवाह किया । तभी से तुमने यह शादी न करने की अड़चन उत्पन्न कर रखी थी। तूंने ही गांगेय को यह प्रतीज्ञा लेने को विवश किया था कि वह जीवन भर विवाह न करेगा। तुम्हारा पुत्र द्वैपायन जो तुम कुंवारी से उस पंगु ऋषि (साधु) पराशर की देन है उसी की सलाह से ही गांगेय ने कांशीराज की कन्याओं का अपहरण किया था।

चित्रागंद के सिंहासन पर बैठते ही अनूप देश के राजा सहस्त्रार्जुन ने आर्यवर्त पर हमला कर दिया था। चित्रागंद लड़ाई में मारा गया था। विचित्रवीर्य जो अक्सर बीमार रहता था। जिसका स्वास्थ्य बहुत ही कमजोर

था। विचित्रवीर्य का भी बीमारी के कारण स्वर्गवास हो गया था। दोनों राजकुमारों के स्वर्गवास हो जाने से हस्तिनापुर को एक भयंकर संकट ने आ घेरा था। इस समय हस्तिनापुर के लिए कोई भी उत्तराधिकारी जीवित नहीं था। दोनों पुत्रवधुएं निसन्तान विधवा हो गई थी।

2.3 क) सरदार महाबाहु

अम्बा केवल एक ही बात पर डटी हुई थी। केवल गांगेय के साथ शादी। गांगेय ही उसे शक्ति से जीत कर लाया है। इस लिए वह गांगेय से ही शादी कर सकती है। सभी ऋषि व अम्बा के नाना होत्रवाहन सहित सभी गांगेय पर शादी बारे ही दबाब डाल रहे थे। पर गांगेय ने यह बिल्कुल स्वीकार नहीं किया।

राज्य सभा की आपातकाल बैठक बुलायी गयी जिसमें कुरू साम्राज्य के दो प्रमुख सरदार महाबाहु व सरदार सुकेतु, मन्त्री कुणिक, राजपुरोहित, आचार्य विभूति, राजमाता और राजमाता के प्यारे सुपुत्र द्वैपायन बैठे थे। सभी आपस में बड़ी गहराई से बातचीत करते रहे थे । बाद में उन्होंने गांगेय को बुला लिया। तब आचार्य विभूति बोले, 'भरतश्रेष्ठ हमने पूरा दिन व आधी रात सभी दृष्टिकोणों से विचार करके देखा है । हम सभी को यही लगता है कि आपको विवाह कर लेना चाहिये। पुत्र के बिना आपके पिता को, पितरों को और जब आप स्वयं पितृलोक में जायेंगे, तब आपको भी तर्पण बिना रहना पड़ेगा।

''आपके भाईयों में से कोई भी जीवित नहीं है और आप शादी नहीं कर रहे हैं। इस प्रकार तो आपका परिवार ही सर्वनाश हो जायेगा। आप जो तीन कांशीराज की कन्यायें लाए थे। उनका क्या होगा। आपके आगे एक ही रास्ता है वह शादी का रास्ता है। इस परिवार का भविष्य अंधकार में दिखायी पड़ता है। कुछ समय के बाद यह परिवार समाप्त हो जायेगा। इन रानियों से पहले तो सन्तान होने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता अगर कोई सन्तान आपके शादी किये बगैर हुई भी तो वह वर्ण शंकर सन्तान होगी। वर्ण शंकर सन्तान उस परिवार को नरक में धकेल देती है। इसलिए

गांगेय आप विवाह करके ही इस परिवार का सर्वनाश होने से बचा सकते हो।'' सरदार महाबाहु ने कहा।

यह स्थिति असहाय है। कुरूओं की सत्ता छिन्न–भिन्न हो जायेगी। इस समय इस परिवार को विनाश होने से आप ही बचा सकते हैं। वरन् आने वाली पीढ़ी आपको क्षमा नहीं करेगी। एक राष्ट्र या देश के सम्मुख उसके हित को देखते हुए यह जरूरी बन गया है कि एक योग्य राजकुमार इस राज्य को दिया जाये। आपने जो ब्रह्मचारी रहने की शपथ ली है वह आपकी माता मत्सगन्धा के स्वार्थ की वजह से ली है। उस शपथ से आज वही आपको मुक्त कर रही है। इस शपथ में जो आपने सारा जीवन ब्रह्मचारी रहने और शादी न करने का निर्णय लिया था। इसमें केवल एक व्यक्ति का स्वार्थ निहित है। राष्ट्र का स्वार्थ सब स्वार्थो से ऊपर है। राष्ट्र का स्वार्थ यह है कि उसे एक योग्य राजकुमार चाहिए। राष्ट्र हित किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत हित से काफी आगे है। इसलिये आपको किसी के व्यक्तिगत हित से ऊपर उठ कर राष्ट्र हित में कार्य करना चाहिये''। सरदार महाबाहु ने कहा।

आपके पिता तथा आपके द्वारा स्थापित धर्म के साम्राज्य का पतन हो जाएगा। पूज्य माता जी का भी यही मत है। आपने अपनी माता सत्यवती के कहने पर ही इस कठोर प्रतिज्ञा का पालन किया था कि आप आजीवन ब्रह्मचारी रहोगे। अब आपको माता ही यह कहती है कि आपको शादी कर लेनी चाहिए और सिंहासन सम्भाल लेना चाहिए। वह अपने द्वारा लिया गया वचन गांगेय को वापिस करती है और शादी करने की आज्ञा देती है। इसलिए गांगेय को शादी कर के इस साम्राज्य को बचा लेना चाहिये। आचार्य विभूति ने कहा।

कुरूओं में सबसे वरिष्ठ महाबाहु ने कहा, 'गांगेय यदि तूने विवाह नहीं किया और यदि तूने राजगद्दी स्वीकार नहीं की तो कुरूओं के समक्ष एक गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। यह स्थिति कितनी भयानक होगी। यह तुझे समझाने की आवश्यकता नहीं है। यदि राजगद्दी पर तूं नहीं बैठता है तो रिश्ते में सबसे निकट होने के कारण इस पर मेरा अधिकार बनता है। मुझे

तो राजगद्दी नहीं चाहिये, लेकिन मेरा ज्येष्ठ पुत्र रूरू इसको ग्रहण करेगा और उस पर उसका उचित अधिकार है। वह वीर है। वह एक अच्छा शासक बन सकता है। लेकिन मैं जानता हूं कि वह कुरूओं को संगठित नहीं रख सकेगा। क्योंकि आप राजमाता सत्यवती के आगे वचनबद्ध है। इसलिए आप उचित या अनुचित, ठीक या गलत देखे बिना वही करोगे जो आपको करने के लिए माता सत्यवती कहेंगी। माता सत्यवती आपको वही करने के लिए कहेगी जो उनको द्वैपायन कहेगा। अर्थात इसमें आप अपनी इच्छा से या राष्ट्रहित, परिवारहित में कुछ भी कर पाने में असहाय ही सिद्ध होंगे। इसलिए सभी व्यक्तिगत स्वार्थो से ऊपर उठ कर राष्ट्रहित में ही विचार करना चाहिए इसलिए राजगद्दी त्यागना मेरे लिए अस्वाभाविक हो सकता है। किन्तु मैं अपने परिवार की अपेक्षा हस्तिनापुर से अधिक प्रेम करता हूं।'' आपको भी व्यक्तिगत जीवन से ऊपर उठकर शासन सम्भाल लेना चाहिए, और शादी कर लेनी चाहिए।

आचार्य विभूति ने कहा, ''गांगेय उस स्थिति में आपका अपना जीवन दुभर हो जाएगा। हो सकता है आपके चाचा महाबाहु का परिवार आपका नेतृत्व स्वीकार भी न कर सके सबसे बड़ा भय तुम्हारे चचेरे भाई सरदार महाबाहु के ज्येष्ठ लड़के रूरू से है। वह एक कुशल सैनिक व वीर योद्धा है''।

'चाचा जी' गांगेय अत्यन्त उदास और धीमें स्वर में बोले, ''मुझे पता चला है कि मेरा व्यवहार शायद कुरूओं को अपराध और देवताओं की दृष्टि में पाप प्रतीत होगा और इससे मेरे पिता का, पितरों का या स्वयं मेरा तर्पण कर सके ऐसे पुत्र का जन्म नहीं होगा। एक क्षण गांगेय रूके और फिर बोले, ''सम्भव है। मेरे जीवन काल में ही भाई–भाई के बीच युद्ध छिड़ जाये, ''आप राजगद्दी स्वीकार नहीं करेंगे इस धारणा के आधार पर तो षडयन्त्र शुरू भी हो गए हैं''। आचार्य विभूति ने कहा।

गांगेय ने धींमे स्वर में कहा, ''शायद इस सारे दुर्भाग्य का मूल मैं ही हूं। कृपया करके मुझे प्रतिज्ञा तोड़ने के लिए न कहें। मेरे लिये वह मृत्यु से

भी अधिक कष्टप्रद घटना होगी। वह मुझ में निवास करने वाले धर्म की मृत्यु होगी।

ब्रह्मिष्ठ ने घरघराती आवाज में कहा, 'कुल श्रेष्ठ प्रतिज्ञा भंग के बारे में सोचते हुए आपने जिस संघर्ष को झेला है। वह हमें ज्ञात है। एक अन्य उपाय भी है और राजमाता की उसमें सहमति है। आप प्रतिज्ञा भंग किये बिना सम्राट शान्तनु के वंश को विलिन होने से बचा सकते हो। ''ऐसा कौन सा मार्ग है''। गांगेय ने पूछा, ''मुझे तो कोई सूझता नहीं।

ब्रह्मिष्ठ ने कांपती आवाज में कहा, ''नियोग का। आजकल नियोग की प्रथा प्रचलित नहीं है। लेकिन पूज्य ऋषियों की इसे स्वीकृति प्राप्त है''। वंश बेल को काटने वाला इन्सान अनेकों जन्मों के पुण्य को नष्ट कर जाता हे। वंश बेल को बनाये रखना ही सबसे बड़ा धर्म, पुण्य माना गया है। गांगेय को यह सुनकर धक्का लगा। उन्होंने कहा, ''आपका आशय है कि मैं अपने छोटे भाईयों की पत्नियों से अपने लिये सन्तान प्राप्त करूं?

''यह प्राचीन प्रथा है जो ऋषियों द्वारा अनुमोदित है''। ब्रह्मिष्ठ ने कहा, गांगेय को यह सुन कर धक्का लगा। उन्होंने कहा, ''आपका आशय है कि मैं अपने छोटे भाईयों की पत्नियों से अपने लिए सन्तान प्राप्त करूं?

''यह प्राचीन प्रथा है जो ऋषियों द्वारा अनुमोदित है''। ब्रह्मिष्ठ ने कहा। गांगेय का चेहरा तम–तमा उठा। बड़ी कठिनाई से उन्होंने अपने क्रोध को नियन्त्रित किया और बोले, ''मैं कांशी की राजकुमारियों से पुत्र उत्पन्न करूं। जिन्हें मैं अपनी पुत्रियों के समान समझता हूं। नहीं–नहीं ऐसा तो मैं सोच भी नहीं सकता। ''कभी–कभी जीवित बचे भाई का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह वंशबेल बनाये रखे। वेदों का कहना है कि वंश वृक्ष को उखड़ने मत दो। ब्रह्मिष्ठ ने कहा। महाबाहु के ह्रदय में आशा जाग उठी, उन्होंने तुरन्त ही कहा, ''मेरे परिवार में एक बार नियोग का प्रयोग हो चुका है। मेरे दादा का जन्म इसी रीति से हुआ था। गांगेय ने आघात से सम्भलते हुए दृढ़ता से कहा, ''नहीं मैं यह नहीं करूंगा नियोग विवाह ही है''।

आचार्य विभूति ने शान्ति से समझाने का प्रयत्न किया। आप यह अपनी वासना पूर्ति के लिए नहीं करते हैं। बल्कि पितरौ का कर्ज चुकाने के लिए करते हैं। वंश बेल तो चलनी ही चाहिए। विवाह और नियोग दोनों में बड़ा अन्तर है। जिस कुल में पितरौं को तर्पण देने वाला उत्तराधिकारी नहीं होता है। वह कुल नरक में जाता है। बगैर पुत्र माता–पिता की मुक्ति भी असम्भव है। फिर नियोग विवाह नहीं है। यह भोग–विलास के लिए नहीं किया जाता है। यह रीति केवल वंश चलाने के लिए ही प्रयोग की जाती है। अम्बा के बारे तो गुरू परशुराम ने भी आपको कहा है। नीति के अनुसार से देखा जाये तो तीनों कांशी राजकुमारियों को आप ही अपनी शक्ति से जीत कर लाये थे। इसलिए आपका उन पर पूरा अधिकार है। फिर यह कोई शादी तो नहीं है। यह तो नियोग की क्रिया से सन्तान प्राप्त करने की विधि है और वह भी परिवार की मानमर्यादा को बचाने के लिये व परिवार को नरक में जाने से रोकने के लिये यह जरूरी है।

ब्रह्मिष्ठ ने कहा, ''आपकी प्रतिज्ञा तो विवाह न करने की है। लेकिन नियोग तो विवाह है ही नहीं''। आचार्य विभूति ने कहा, ''गांगेय आपके दुःख और आत्मसंघर्ष को देख कर हम कम दुःखी नहीं है। लेकिन यदि आप हमारे विचार पर गहराई से विचार करेंगे तो पायेंगे कि इसके अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय है ही नहीं।''

गांगेय ने निर्णयात्मक रूप में कहा, ''विचार करने की मुझे तनिक भी आवश्यकता नहीं है। मैं जानता हूं कि यदि मैं अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहा तो इससे अनेक संकट पैदा हो जायेंगे। इस का एक मात्र उपाय यही है कि मेरा जीवन अब ऐसा हो कि आने वाले वर्षो में राजसिंहासन पर जो भी बैठे उसकी शक्ति कम न हो और धर्म की स्थापना हो, प्रसार हो। माता सत्यवती ने पल्लू से चेहरा ढांप लिया ताकि कोई उनके चेहरे पर व्यक्त हुई वेदना का भाव देख न सके।

ब्रह्मिष्ठ ने कहा, ''पर यदि कोई और सम्बन्धी राजगद्दी पर बैठ गया तो आपकी माता की क्या दशा होगी। इसका तो विचार करो। यह आपकी

माता की इच्छा है कि आप नियोग द्वारा इन रानियों से सन्तान पैदा करें। वचन भी आपसे शादी न करने का आपकी माता ने ही लिया था। अब आपकी माता ही उस लिए गए वचन को वापिस लौटा रही हैं।''

गांगेय ने कहा, ''जब तक मैं जीवित हूं तब तक मां का गौरव और अधिकार बनाये रखूंगा। सत्ता में न रहते हुए भी मैं यही ध्यान रखूंगा कि माता को पूर्ववत् आदर व निष्ठा प्राप्त होती रहे। माता कुरूओं की कुल देवी है। और जब तक जीवित रहेंगी । कुरूओं की कुलदेवी बनी रहेंगी।

गांगेय के नियोग द्वारा सन्तान उत्पति बारे इन्कार किया जाने के बाद माता सत्यवती एक दम रूख बदल गई। कोई भी दरबारी यह विश्वास नहीं कर पा रहा था कि माता सत्यवती अचानक इतना कठोर निर्णय ले सकती हैं। शान्तनु का जो वंशज न हो उस पर आश्रित होकर जीना उनको पसन्द नहीं था। माता सत्यवती ने यह स्पष्ट कर दिया था। उनकी यह अभिव्यक्ति वज्रपात के समान थी। जिसे देख कर सभी स्तब्ध रह गये थे। इससे गांगेय को बहुत बड़ी ठेस पहुंची।

माता सत्यवती ने ऋषि व्यास, मन्त्री कोडिन्य, कुलपुरोहित ब्रह्मिष्ठ से मन्त्रणा करके इस निर्णय पर पहुंची कि कांशीराज की कन्याओं को नियोग द्वारा पुत्र प्राप्त हों। दोनों राजकुमारियां सत्यवती के पुत्र द्वैपायन से नियोग कर के सन्तान पैदा करेंगी। इससे गांगेय तो सहमत हो गए। लेकिन कुरूओं के सबसे वरिष्ठ सरदार महाबाहु व उनके ज्येष्ठ पुत्र रूरू ने इसका खुलकर विरोध किया। क्योंकि द्वैपायन कुंवारी मत्सगन्धा से पैदा हुआ था। सरदार महाबाहु व उनके पुत्र रूरू उसको क्षत्रिय नहीं मानते थे। उसका राजघराने से भी कोई सम्बन्ध नहीं था। इसलिए कांशीराज कन्याओं के साथ द्वैपायन से नियोग करवाना बिल्कुल उचित नहीं था। गांगेय के इससे इन्कार किए जाने के बाद कांशीराज कन्याओं के साथ नियोग इनके चचेरे भाई सरदार महाबाहु के लड़के नायक रूरू से ही करवाया जाये। क्योंकि वह क्षत्रिय भी है। राजघराने से भी उनका खून का रिश्ता है। महारानी सत्यवती इसके पक्ष में न थी। गांगेय तो पहले ही सहमत थे। वे माता के किसी भी आदेश की

उलंघना नहीं कर सकते थे। मन्त्री कोडिन्य, राजपुरोहित ब्रह्मिष्ठ, ऋषि द्वैपायन ये सभी मिलकर महारानी सत्यवती को सरदार महाबाहु व उनके पुत्र के खिलाफ भड़का रहे थे। द्वैपायन को ही इसके लिए उचित ठहराने के प्रयत्न कर रहे थे।

सरदार महाबाहु जो शान्तनु के छोटे भाई व शाही सेना के सेनापति थे। वह कुरू वरिष्ठ थे। सरदार महाबाहु इस बात को सहन नहीं कर सका और उसने क्रोध में आकर अपने परिवार व लड़के नायक रूरू के साथ हस्तिनापुर राज्य को छोड़कर कुरूक्षेत्र के जंगलों में चले गए।

2.4 वीर रूरू :

नायक रूरू शान्तनु के छोटे भाई सरदार महाबाहु का ज्येष्ठ पुत्र था वह आर्य राजाओं की वंश वृक्षावली का 48वां राजा था। वह पुराणों, महामुनि ग्रन्थ, भगवान परशुराम ग्रन्थ अनुसार अपने प्रयत्नों से अनूप देश के राजा सहस्त्रार्जुन की सेना में सेनापति बना और चर्मणामती चम्बल घाटी का राजा बना। जिसका भुभाग झांसी, भैरागढ़, ग्वालियर, आगरा, बादलगढ़ तक फैला हुआ था। वह महाभारत से लगभग 80 वर्ष पहले सहस्त्रार्जुन की सेना में भर्ती हुआ। महाभारत सम्वत इस समय 5102 वर्ष है। इसमें 80 वर्ष जोड़ने से 5182 वर्ष पूर्व रूरू का कार्यकाल था।

महाभारत के युद्ध के लिये अभी कई वर्ष बीतने थे। युग स्थानान्तरण

होने में अभी एक सदी का समय बकाया था। उन पांच देव पुत्रों पाण्डवों जिनका अभी तक जन्म भी नहीं हुआ था। महाभारत में उनकी विजय के लिये शिलान्यास इसी राजा रूरू द्वारा महिष्मती राज्य के रूप में स्थापित किया जा चुका था। उन पांच देव पुत्र पाण्डवों जिनको 13 वर्ष बनवास दिया जाने में अभी अनेकों वर्षों का अन्तर पुरा किया जाना था। उन्होंने यह बनवास राजा रूरू द्वारा स्थापित किये गये चर्मणामती चम्बल घाटी व विराट नगर बैकुण्ठ से गुजारना था। महाबली भीम जिनका अभी जन्म भी नहीं हुआ था। उन्होंने इसी महिष्मती राज्य की गोमती नदी के किनारे पर गिरनार पर्वत की तलहटी में बसे यादव गोत्र के पास नाग गोत्र की कन्या हिडिम्बा से शादी होनी थी। और घटोत्कच जैसे महावीर का जन्म इसी महीष्मती राज्य के एक साम्राज्य में होना था।

पाण्डवों का महाभारत में लड़ने व शौर्य दिखलाने के लिये हस्तिनापुर से बाहर के आर्य राजाओं द्वारा जो इसी महीष्मती साम्राज्य के संघ के राज्य थे। उन राजाओं द्वारा पाण्डवों को सैनिक सहायता दी जानी थी। जिसमें कई वर्षों का समय गुजरना अभी शेष था। महावीर घटोत्कच जिनकी शिक्षा, शस्त्र सिखलाई इसी महिष्मती साम्राज्य के एक राज्य जिसका नाम गान्धर्व राज मृत्कावती राज्य था। उसमें होने के लिये अनेकों वर्षों का गुजरना आवश्यक था।

लड़ाईयां :

सहस्त्रार्जुन ने अपने नायकों को गढ़ के प्रांगण में एकत्रित किया। तुण्डीकेरा गोत्र का राजपुत्र रूरू अपने तुण्डीकेरा नायकों को साथ लेकर एक और खड़ा था। सहस्त्रार्जुन ने अपने नायकों का मन पहचान लिया था। वो सब दिल से वीर रूरू का सम्मान करते थे। सहस्त्रार्जुन ने वीर रूरू को महाबलाधिकृत के पद पर नियुक्त कर दिया था। महाबलाधिकृत रूरू सहस्त्रार्जुन का दायां हाथ था। वह एक योद्धा की वेशभूषा में था। सहस्त्रार्जुन उग्र और विकराल लग रहा था। राम सहस्त्रार्जुन द्वारा जेल में डाला हुआ था। यह वही राम था जो बाद में परशुराम के नाम से प्रसिद्ध हुआ था। राम को कैद में डालने के बाद से सभी भृगु गोत्र राजा सहस्त्रार्जुन के शत्रु बन

गये थे। वो राम को छुड़ाना चाहते थे। ''ये भृगु लोग मेरा राज्य छीनना चाहते हैं। इसीलिए ये यहां पर एकत्रित हुए हैं। और यह राम हमारा सब से बड़ा शत्रु है। जिस बारे पूरी सावधानी रखनी हमारा सबका कर्त्तव्य बनता है।

भृगु विद्रोह का दबाना :

ज्यों ही राम को अनूप देश में कैद कर दिया उसी समय भृगु गोत्र ने विद्रोह कर दिया। राम जमदग्नि का लड़का और अनूप देश के भूतपूर्व राजापुरोहित ऋचक के पौत्र थे। ऋचक अनूप देश को छोड़कर आर्यवर्त में भाग गया था। 'ये भृगु लोग मेरा राज्य छीनने के लिए यहां एकत्रित हुए हैं। और यह राम जिसने अब जेल में ही परशु धारण करने का निर्णय ले लिया है। जिससे यह भृगु गोत्र में यह परशुराम के नाम से जाना जाने लगा है। इनको कुचलना है ताकि भविष्य में ये विद्रोह का नाम लेने से भी डरे''।

परशुराम और उसके शिष्यों को छोड़ मत देना वह ही एक मात्र वीर पुरूष है। जो भृगुओं को एक लड़ी में पिरो सकता है। महाबलाधिकृत ने अपनी सेनाओं को लेकर इस विद्रोह को कुचल दिया। भृगु सेना की कमान राजा प्रतीप के हाथों में थी। प्रतीप की सेनाएं हार कर भाग गई।

रूरू बड़ी गहरी समझ का आदमी था। हैह्य साम्राज्य को बनाये रखने में ही उसकी तथा उसके कुल की विजय थी। सहस्त्रार्जुन चाहे जैसा भी था, पर वह एक साम्राज्य का स्वामी और हैह्य सघ का शिरोमणि था। यह बात वह भूल नहीं पाता था। वह उसे और उसके कुल को भूल नहीं पाता था। यह बात वह भली भांति जानता था कि महिष्मती देश के हैह्य गौत्र के बाद दूसरा आर्य गौत्र तुण्डिकेरा था। बड़े ये दो गौत्र ही थे इनके अलावा दूसरे शर्यात, यादव, भृगु आदि कई आर्य गौत्र यहां पर रहते थे।

लंका की लड़ाई :

सहस्त्रार्जुन की महत्वकांक्षा दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। रूरू को महाबलाधिकृत के पद पर नियुक्त करके वह अपने राज्य की सीमायें बढ़ाने की सोचने लग गया था। लंका के राजा रावण द्वितीय पर आक्रमण

करने की तैयारियां आरम्भ हो गयी। समुद्री पोत तैयार किए गए। समुद्री पोत इतने विशाल थे कि घोड़ों समेत सैंकड़ों सैनिक उनमें यात्रा कर सकते थे। काफी मात्रा में शस्त्र व खाद्य सामग्री इक्ट्ठी की गई।

अरब देशों में घोड़ों, ऊंटों के व्यापार में बहुत बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता था। इसलिए सहस्त्रार्जुन चाहता था कि व्यापार समुद्री रास्ते से किया जाये। आर्यवर्त से होते हुए कन्धार–गन्धार पहुंचने से रास्ते में अनेक गौत्र ऐसे पड़ते थे। जो सामान को रास्ते में ही लूट लेते थे। समुद्री रास्ता व्यापार के लिए काफी सुरक्षित रास्ता था। इसलिए लंका को अपने अधीन करना आवश्यक हो गया था।

सहस्त्रों पोत तैयार किये गए। एक–एक पोत इतना बड़ा था जिसमें अनेकों घोड़े व खाद्य सामग्री आ सकती थी। महाबलाधिकृत रूरू के नेतृत्व में एक शक्तिशाली सेना लंका के लिए तैयार की गई । इस वाहिनी के साथ सहस्त्रार्जुन भी तैयार था। एक बात यहां साफ कर देना चाहता हूं कि कुछ लोग व ग्रंथ भ्रम में फंसे हुए है कि परशुराम रावण के समय भी जीवित थे और महाभारत के समय भी जीवित थे। लेकिन यह भ्रम बिल्कुल झूठ है। क्योंकि प्राचीन ग्रंथों, महामुनि नामक ग्रंथ, परशुराम ग्रंथ व स्कन्धों के अनुसार परशुराम का बचपन से ही सहस्त्रार्जुन की कैद में होना सिद्ध होता है। ये ग्रंथ यह भी साफ कर देते हैं कि व्यास, गांगेय, रूरू, परशुराम द्वितीय मन्त्री कुणीक आदि समकालीन थे। जिन रावण का हवाला आता है वह रावण रामायण के समय वाले नहीं थे। बल्कि इनके समकालीन रावण द्वितीय थे। जब सहस्त्रार्जुन ने लंका पर हमला किया प्राचीन ग्रंथों के अनुसार राम जो बाद में परशुराम के नाम से जाना जाता था। वह अनूप देश में सहस्त्रार्जुन की कैद में था।

समुद्री पोतों से अनूप देश की सेना लंका में पहुंच गई थी। लंका में समुद्र के किनारे अपनी छावनी का पड़ाव डाल दिया था। शिविर बनाए जा रहे थे। खाद्य सामग्री को सम्भाल कर रखा जा रहा था। चारों ओर जंगल ही जंगल थे। लंका समुद्र के बीच घिरा हुआ एक ऐसा देश था। जिसे चारों

ओर समुद्र होने के कारण काफी सुरक्षित समझा जाता था। सन्देशवाहकों को चारों दिशाओं मैं दौड़ाया गया था। हर कार्य सावधानी से किया जा रहा था।

गुप्तचर विभाग व जासूसी का कार्य अधिकतर औरतों ने सम्भाला हुआ था। वे वीरांगनाएं हथियार चलाने में प्रवीण थी। ये अपना भेष बदलकर शत्रु को धोखा देकर अपना कार्य निकालने में निपुण थी। शत्रु सैनिकों के पास जाकर उनसे गुप्त सूचनाएं प्राप्त करती थी और अपनी विजयवाहिनी तक भेजती थीं। इन जासूस व गुप्तचर वीरांगनाओं में विष कन्यायें भी होती थी। जो शत्रु की सेना के सरदारों तक पहुंच कर गुप्त सूचनाएं प्राप्त करती थी। उनके यौन अंगों पर बहुत भयानक विष का लेप किया होता था। इन गुप्चर कन्याओं के किसी अंग का मुंह से स्पर्श करते ही शत्रु कुछ ही क्षणों में मृत्यु शैय्या पर पड़ा होता और वे वीरांगनायें अपना कार्य पूरा कर वहां से बच निकल जाती थीं।

विजयवाहिनी को गुप्तचर विभाग के जासूसो द्वारा यह सूचना प्राप्त हो चुकी थी कि रास्ते से शत्रु पर हमला करना है। शत्रु कितनी मात्रा में कहां–कहां पर है। महाबलाधिकृत को ये सूचना प्राप्त होते ही सेना के नायकों व सरदारों को आदेश दे दिए थे कि हमला किस–किस दिशा में करना था।

अगले दिन सुबह ही विजयवाहिनी शत्रु की सेना की तरफ प्रस्थान कर चुकी थी। मार्गदर्शक व संदेशवाहक विजयवाहिनी के आगे–आगे चल रहे थे। रास्ते में घने जंगलों से गुजरना था। जिनमें रास्ता बनाना कठिन था। जहां से भी विजयवाहिनी आगे बढ़ती वहीं से गांव के गांव खाली हो जाते। लोग अपने पशुओं को लेकर जंगल में दूर जा ठहरते। विजयवाहिनी अपने पीछे सभी फसलों को उजाड़ती हुई सिर्फ धूल भरे रास्ते ही छोड़कर जाती थी।

विजयवाहिनी शत्रु की सेनाओं के निकट पहुंच चुकी थी। दोनों सेनायें आमने–सामने खड़ी थी। विजयवाहिनी की तरफ से शंख व नगारों की आवाज आई साथ ही शत्रु सेनाओं की तरफ से भी शंख की आवाज आयी।

देखते ही देखते दोनों सेनाएं आपस में टकरा चुकी थी। पैदल–पैदल के साथ लड़ रहा था। अवश्वारोही–अश्वारोही के साथ लड़ रहा था। चारों तरफ मारकाट छिड़ चुकी थी। आवाज व खून के बहाव ने वातावरण को डरावना बना दिया था। सांय तक घमासान युद्ध हुआ। दोनों ओर से हजारों जवान शहीद हुए। अनगिनत पशु मौत के घाट उतारे गए।

विजयवाहिनी आगे बढ़ती जा रही थी। इसी बीच सूर्य की लालिमा दिखाई देने लग गई थी। अन्धेरा बढ़ रहा था। लड़ाई रूक चुकी थी। सभी योद्धागण अपने–अपने शिविरों को चले गए थे। पूरा दिन घमासान युद्ध के कारण अनेक पशु मारे गए थे। शहीद सैनिक चारों ओर बिखरे पड़े थे, किसी की बाजू नहीं थी। किसी की गर्दन नहीं थी। किसी के शरीर में गहरा घाव था। सभी जख्मी योद्धाओं को मरहम पट्टी की जा रही थी। इसी बीच रावण द्वितीय की तरफ से संदेशवाहक सन्देश लेकर सहस्त्रार्जुन के शिविर में पहुंचा। सन्देश रावण द्वितीय द्वारा भेजा गया था कि वह संधि करने के लिये तैयार है। दोनों ओर के अधिकारियों की बैठक में सन्धि पर हस्ताक्षर किए गए।

गिरनार की लड़ाई :

उज्जयन्त अथवा गिरनार पर्वत की तलहटी में यादव गोत्र रहता था। जमदग्नि के लड़के राम को महिष्मती के राजा सहस्त्रार्जुन ने कैद करके रखा हुआ था। जिस समय आर्यवर्त पर हमला करके सहस्त्रार्जुन जमदग्नि के लड़के राम को उठा कर ले गया था। उसी समय सप्तसिन्धु के राजा सुदास की बहन लोमहर्षीणी को भी उठा कर ले गया था। सहस्त्रार्जुन उससे शादी करना चाहता था। सप्तसिन्धु के राजा सुदास ने भी अपनी बहन लोमहर्षिणी की शादी राजा सहस्त्रार्जुन के साथ हुई मान ली थी। लेकिन सहस्त्रार्जुन लंका की लड़ाई में चला गया और उनके शादी रस्म पूरे न हो सकी । जिसके जाने के बाद राम ने अपने धार्मिक कार्यो के कारण सहस्त्रार्जुन की रानी भृगा को खुश कर लिया और उसे राम को जेल से बाहर निकालने के लिए राजी कर लिया।

राम अवसर का लाभ उठाकर और सहस्त्रार्जुन की होने वाली रानी लोहमर्षिणी को अपने साथ लेकर महिष्मती राज्य से निकल भागा और गिरनार की तलहटी में बसे भृगुओं में जा पहुंचा। गिरनार पहुंच कर राम परशुराम भद्रश्रेण्य से जा मिला। भद्रश्रेण्य एक विद्रोही नेता था। वे महाबलाधिकृत रूरू से लड़ने की हिम्मत न बना सके। और अपने सभी सैनिकों को लेकर गिरनार से आर्यवर्त की तरफ दौड़ पड़े। जिसका वर्णन प्राचनी ग्रंथों के अनुसार इस प्रकार है, ''आठ व्यक्ति जैसे उड़ते हुए घोड़ों पर मही नदी के किनारे पर जा रहे थे। उन आठ आदमियों के बीच चालीस पानीदार घोड़े थे। एक पहर बीतने के उपरान्त प्रत्येक अश्वरोही अपना घोड़ा बदलता था। इससे घोड़ों को थकान कम होती थी और उनकी गति का वेग बढ़ जाता था। इस प्रकार परशुराम व भद्रश्रेण्य अपनी सेनाओं को लेकर भागे जा रहे थे। अश्वारोही न तो थक रहे थे और न उन्हें भूख लग रही थी। उनकी एकाग्र दृष्टि क्षितिज पर टकराती थी।

''भद्रश्रेण्य ।'' भागर्व ने कहा, 'एक क्षण का भी विलम्ब उचित नहीं है। यहां आगे चलकर कितने और अपने आदमी हैं। कोई दो–सौ होंगे। सब मिलकर इन जंगलों में भृगु कितने होंगे? चार सौ''। आर्नत में कितने होंगे? एक सहस्त्र। प्रतीप कहां है? यहां से अर्वान्त जाते हुए मही के तट पर ही उसने एक बड़ा सा गोत्र बसा लिया है''।

भद्रश्रेण्य । सहस्त्रार्जुन भृगुओं का संहार करने के लिए एक विशाल सेना भेज रहा है। मैंने चारों ओर अपने आदमी भेज दिये हैं। विमय और विसाखा के साथ भी जो लोग हों, उन्हें बुला लो। पीछे रहने पर वह किसी को जीवित न छोड़ेगा। उनके महाबलाधिकृत रूरू की मर्दानगी का इस समय संसार में कोई मुकाबला करने वाला नहीं है। उनके साथ लड़ाई करने का मतलब होगा हम भृगु गोत्रियों का सर्वनाश। इसलिये हमारे लिए यही बेहतर है कि हम देश को छोड़ आर्यवर्त को चले जायें। मैं जमदग्नि पुत्र परशुराम आपका अपना गुरू होने के नाते आपको आदेश देता हूं कि आप सभी मेरे साथ इस गिनार नामक स्थान को शीघ्र से शीघ्र छोड़ दो।

''क्या कहा है आपने?''

तालबाहु को महाबलाधिकृत के पद से हटाकर सौराष्ट्र भेज दिया है। सहस्त्रार्जुन ने रूरू को नए महाबलाधिकृत का कार्यभार सौंप दिया है। पांच सहस्त्र शर्यातों को उसने एकत्रित किया। उसने आर्नत राज्य को भी दो सहस्त्र सैनिक लेकर उपस्थित होने की आज्ञा दी है। उसके यहां आ पहुचंने के पहले ही हमें यहां से अपनी सेना व भृगुओं को लेकर जाना होगा। हमारी रक्षा केवल आर्यवर्त पहुंचने पर ही हो सकती है।

'हमारी संख्या सहस्त्रों में है। हमें शीघ्र से शीघ्र इस स्थान को छोड़ देना चाहिए। अवन्तिराज भी हम पर हमला कर सकता है क्योंकि सहस्त्रार्जुन ने ऐसा करने के लिए उसको आदेश दिए है''। परशुराम ने कहा ।

अवन्ति गोत्र का राजा वितिहोत्र भद्रश्रेण्य का मौसेरा भाई था। और उनका बाल सखा भी था। वितिहोत्र के कोई पुत्र नहीं था। उसको यह बात चुभा करती थी। उसकी यह धारणा थी कि महाअर्थवण ऋचक का श्राप ही शायद उनके पुत्र न होने का कारण हो। वितिहोत्र चाहता था कि वह महाअर्थवण ऋचक के पौत्र राम से मिल कर ही उस का श्राप से अपने आप को माफ करवा सकता है। उनके मन में किसी दिन गुरूदेव की पूजा कर उनसे कृपा याचना करने की इच्छा भी उसके मन में उठी थी। परशुराम वितिहोत्र के पास यह सोच कर गया था कि वह किसी भी प्रकार से उनको मनवा लेगा कि वह प्रतीप पर हमला नहीं करेगा। क्योंकि वह महिष्मती राज्य के संघ में था। उसके लिए दुःख था तो केवल यह कि उसकी छः पत्नियां थी। पर किसी भी पत्नी से पुत्र नहीं था। वह अपनी स्त्रियों सहित दिन में दो बार पशुपति महाकाल की पूजा किया करता था। जंगल में सिद्देश्वरी के टिले पर कापालिक लोग रहा करते थे। उन्हें भी प्रसन्न रखने का वह प्रयत्न करता था।

इन कापालिकों की गुरू थी एक स्त्री महादेवी सहस्त्रों वर्षो से राख खाकर जी रही थी। वह हमेशा समाधि में मग्न रहा करती थी। और त्रिकाल दर्शन की अधिकारिणी थी। वितिहोत्र के मन में उससे आर्शीवाद प्राप्त करने

की तीव्र उत्कण्ठा थी पर उसे समाधि में से जगा लेना टेढ़ी खीर थी। ऐसा कहा जाता है कि यदि उसे कोई उसकी समाधि से जगा लेता था तो उसे वह श्राप द्वारा जलाकर भस्म कर देती थीं और यदि वह किसी को आर्शीवाद देना चाहती तो स्वयं ही अपनी समाधि से उठकर उसे बुला लिया करती थी। ऐसी ही एक दम वितिहोत्र को अचानक आवाज सुनाई दी थी और वह उसी टिले की ओर भागा था जहां पर वह साध्वी तपस्या किया करती थी। जब वह दौड़ता हुआ वहां पर गया और साध्वी से आर्शीवाद प्राप्त किया वहां पर सामने परशुराम को भी खड़ा देखा था।

परशुराम ने वितिहोत्र से प्रतीप पर हमला न करने के करे बारे प्रार्थना की पर वह सहस्त्रार्जुन व महाबलाधिकृत रूरू के साथ किसी भी प्रकार का छल–कपट करने के पक्ष में नहीं था। इस लिए परशुराम की कोई भी प्रार्थना मानने से उसने तुरन्त इन्कार कर दिया था। जिस टिले पर वो दोनों खड़े थे वहां चारों ओर अस्थि–पिंजर, राख, खोपड़ियां इत्यादि कापालिकों की प्रिय वस्तुयें पड़ी रहा करती थी। एक और उन्होंने कापालिकों को देखा वहीं से वह पुकार आ रही थी।

कापालिकों और अघोरियों की यह महादेवी के समान सिद्देश्वरी थी ऐसा माना जाता था कि वह सहस्त्रों वर्षो से तपस्या कर रही है और अमर है। उसके जीवन व आयु के बारे कोई भी नहीं बतला सकता था। उसके मंत्रों से अनेक प्रकार की सिद्वियां मिल सकती थी। यह लगातार समाधि में बैठी रहा करती थी। और तीन वर्ष में जब वह जागती थी तो अघोरियों का बड़ा भारी उत्सव होता था। वितिहोत्र के कान में हर्ष की एक ठंकार–सी हुई, दौड़ते हुए जाकर नमस्कार किया। महादति ने आज उसी के लिए समाधि त्यागी थी।

पन्द्रह दिनों से प्रतीप द्वारा स्थापित भृगु गोत्र की छावनी में सहस्त्रों भृगु प्रस्थान की तैयारी कर रहे थे। दिन और रात लोग चारों और से आते जा रहे थे। सहस्त्रार्जुन के सर्वनाशकारी क्रोध से बचने के लिये अज्ञात जंगलों, पर्वतों तथा मानव आक्रमण से अब तक अस्पर्श्य मरूस्थलों में

होकर आर्यावर्त जाने के लिये यह मानव समूह तैयार हो रहा था।

तीन दिन पहले मार्ग शोधक टुकड़ी आगे निकल चुकी थी। अगले दिन स्थान खोजकर विरामस्थल निर्दिष्ट करने वाली टोली जा चुकी थी। उसकी अगली सायं को कुछ सेना लेकर प्रतीप मार्ग को साफ करने के लिये आगे बढ़ रहा था।

भृगुओं का एक विशाल समुह आज सवेरे प्रस्थान करने वाला था। पहले ग्वालों का समूह पशुओं को लेकर रास्ता बनाने को गया। उसके पीछे–2 गाड़ियों में स्त्रीयों आदि को साथ लेकर आगे बढ़ा। दो सहस्त्र गाड़ियां चल रही थी। चारों और सैनिकों का ब्यूह उन्हें घेर कर चल रहा था। लोमा, कुर्मा और विशाखा उस ब्यूह के नायक थे। इस गोत्र के ब्यूह के पीछे एक छोटा सा सैनिक दल धीरे–2 आ रहा था। उज्जयन्त उसका नायक था।

इसके पीछे–2 चुने हुये योद्धाओं का एक सैनिक दल कुछ कोस की दूरी पर चल रहा था। भद्रश्रेण्य और विमद उसके अग्रणी थे। पीछा करने वाले किसी भी आक्रमणकारी सैनिक दल का सामना करके उसे रोकने का काम इस सैनिक दल को सौंपा गया था। सेनापति रूरू को सेना के बारे अभी कोई भी पता नहीं था कि वह पीछे–पीछे आ रहा है या कि नहीं फिर भी परशुराम व उसकी सेना जो राजा स्वयं उसका नेतृत्व कर रहे थे। सेनापति रूरू से भयभीत थे। परशुराम हाथ में प्रचण्ड परशु को लेकर तेज के पुन्ज से चौकसी ढंग से बीचो–बीच घूम रहे थे। उनका काला घोड़ा हवा के समान तेज दौड़ने वाला बीच–बीच में हिन हिना रहा था।

चलते–चलते पशु व सैनिक बुरी तरह थक चुके थे। रास्ता भी साफ दिखाई देना मुश्किल हो रहा था। वहीं स्थान देखकर सेना ने पड़ाव डाल दिया था। पशुओं की सेवा की जा रही थी। पशुओं को चारा डाला जा रहा था। अपनी गाड़ियों की अच्छी प्रकार से चांच पड़ताल की जा रही थी और अगले दिन के लिए तैयार किया जा रहा था। खाना बन रहा था। सैनिक खाना खा रहे थे। परशुराम बीच में चिन्तित हालात में घूम रहे थे। सारी रात

पशु व सैनिकों ने आराम किया और उसके बाद अगले दिन चलने की तैयारी प्रातः से ही आरम्भ हो गई थी।

दिन निकलते ही पशु व गाडियां दुबारा से यात्रा करने के लिए चल पड़ी थी। बीच–बीच में परशुराम कहते फिर रहे थे कि गति धीमी न होने पाये। गति को तेज करने पर ही हम आर्यवर्त पहुंच पायेंगे। यह समय हमारे रूकने व आराम करने का नहीं है। पूर्ण विराम केवल उसी हालात में देना है जबकि पशु आगे बढ़ना बन्द कर दे या पूरी तरह से थक जायें। मैं सभी भृगुओं को यहां से ले जाना चाहता हूं। पता चला है कि सहस्त्रार्जुन के सेनापति रूरू ने गिरनार पर हमला करने की तैयारी आरम्भ कर दी है। मैं भृगुओं और मेरे साथ जो सैनिक है। इनका सर्वनाश नहीं करवाना चाहता, क्योंकि मैं सहस्त्रार्जुन के सेनापति रूरू की दैविक यौद्धा व महारथी वाली शक्ति को अच्छी प्रकार जानता हूं कि सेनापति रूरू से लड़ाई का मतलब है भृगुओं का सर्वनाश और सेनापति रूरू की विजय। देरी करना हमारे लिए घातक होगा। सेनापति रूरू अपनी सेना को लेकर जब तक महिष्मती से गिरनार पहुंचे। हमें गिरनार की तलहटी को छोड़ कर आर्यवर्त पहुंच जाना चाहिए नहीं तो सेनापति रूरू हमें यमलोक पहुंचाकर ही छोड़ेगा।

प्रचण्ड अजगर के समान भृगुओं की गाड़ियों की श्रेणी योजनों तक फैली जा रही थी । चलते हुए पहियों की चू–चूड़ध्वनि पशुओं और घोड़ों के शब्द और मानव–समूह के कोलाहल से निर्जन जंगलों में विचित्र प्रतिध्वनियां हो रही थी। सारा वातावरण आशा और उत्साह से भरा था। सभी सेनापति रूरू के भय से ग्रस्त थे जबकि सभी महिष्मती देश में ही पले थे लेकिन उन्होंने देश विद्रोह का फल भोगना पड़ रहा था। सभी भयभीत थे कि कहीं सेनापति रूरू की सेना उन तक न आ पहुंचे। परशुराम काले घोड़े पर बैठे हुए थे। और चिन्तित और बेचैन दिखायी दे रहे थे वो सभी को कहते फिर रहे थे कि गति किसी भी हालात में धीमी न होनी पाये।

विशाखा और कुर्मा के नेतृत्व में चल रही गाड़ियां और सैनिक दल की व्यवस्था बहुत अच्छी प्रकार की गयी थी । परशुराम नायक विशाखा और नायक कुर्मा के साथ सारे मानव–समूह की व्यवस्था को अच्छी प्रकार

परख रहे थे। प्रति दस गाड़ियों पर उन्होंने एक–एक नायक नियुक्त किया हुआ था और ऐसे पांच नायकों पर एक–एक मुखिया नियुक्त किया गया था। कुछ अश्वारोही थोड़े–थोड़े अन्तर पर इधर से उधर चक्कर लगाकर सन्देश पहुंचा आते, और इस प्रकार सारे तंत्र का संचालन सरल हो गया था।

अवन्तिनाथ ने प्रचूर खाद्य सामग्री दे दी थी। उनके साथ भेजे हुए मार्गदर्शक जंगलवासियों से मिलकर भी कुछ व्यवस्था कर दिया करते। अधिकांश लोगों को तुरन्त शिकार करके ही खाना जुटाना पड़ता था। इसलिए प्रत्येक नायक उसकी खोज में घूमा करता था। किसी नदी या झरने के किनारे पर प्रवासी यात्रा के मध्य और मध्य रात्रि में विश्राम करते, उस स्थान से आवश्यक पानी भरकर साथ ले लेते। और आगे बढ़ जाते। आवश्यकता पड़ने पर पशुओं आदि को भी वहीं पर पानी पिलाया जाता था। गोत्र के प्रवास के परिचित लोगों को आरम्भ में तो यह सब सरल जान पड़ा। श्रद्धा की सरिताएं चारों ओर बह रही थी। और सबको भिगो रही थी। सामान्य प्रवासी को इस बात की चिन्ता नहीं थी कि इतना बड़ा समूह कैसे आर्यवर्त पहुंचेगा। रास्तें में किस–किस प्रकार की कठिनाईयां सामने आयेंगी। कुछ लोग तो यह सब कुछ समझ ही नहीं पा रहे थे। सभी ये सोच भी रहे थे कि आर्यवर्त कैसा स्थान होगा वहां पर किस प्रकार की जलवायु होगी। लोग कैसे अपना जीवन निर्वाह कर रहे होंगे। कुछ लोग तो परशुराम की कमजोरी को बुरा–भला भी कह रहे थे। वो लड़कर शहीद होना बेहतर समझते थे। लड़ाई से डर कर भागना क्षत्रिय धर्म नहीं कहलाता पर वो परशुराम व भृगुओं के साथ भागने पर मजबूर थे। महिष्मति देश व आसपास भी सभी गोत्र आर्य ही थे। लेकिन उन आर्यो और आर्यवर्त के आर्यो में बहुत बड़ा अन्तर था। आर्यवर्त के आर्य कुछ धार्मिक अधिक थे हवन, यज्ञों आदि में बहुत विश्वास रखते थे लेकिन महिष्मती देश के आर्यो में ऐसा नहीं था। वहां पर कई गोत्र तो असभ्य व जंगली थे। पानी की कमी थी।

प्रस्थान के तीसरे दिन सभी गाड़ियां, पशु और सैनिक तेज गति के साथ अपनी यात्रा को तय करते हुए आगे बढ़ रहे थे। उसी दिन पीछे कहीं

दौड़ते हुए आ रहे घोड़ों की टापों की गूंज सुनायी पड़ी। दौड़ते घोड़ों पर आकर मार्गदर्शक ने सूचना दी कि सेनापति रूरू अपना सैनिक बल लेकर महिष्मती की सीमा पार करके उज्जयन्त अथवा गिरनार के इलाके में प्रवेश कर गया है। उसके साथ एक शक्तिशाली सेना दल है। उसी वाहिनी की गति को देखते हुए वह हम तक बहुत ही शीघ्र पहुंच जायेंगे। सेनापति रूरू की वाहिनी की गति को देखते हुए हमें अपनी वाहिनी की व पशुओं की गति को बढ़ाना पड़ेगा। रास्ते में आराम के लिए विराम कम देने होंगे, तभी हम अपनी वाहिनी व पशुओं के साथ आर्यवर्त सेनापति रूरू के हम पर हमला करने से पहले पहुंच सकते हैं। इसलिए एक ही उपाय हमारे सामने है वह है गति और तेज गति।

एक काले घोड़े पर परशुराम उधर ही आ रहे थे जो बहुत चिन्तित व बेचैन दिखायी दे रहे थे। उनके आते ही सभी ने आवाज दी कि भागर्व आ गए हैं। भगवती और कुर्मा ने उनके चरणों की धूल माथे को लगाई। सभी को कुशल पूछते हुए भार्गव पैदल चलकर गाड़ियों के पास गए। गाड़ियां रूक गई। लोग उतरकर भार्गव के पांव पड़ने लग गए। भागर्व आर्शीवाद देते हुए आगे बढ़ चले। रात हो गई थी। रात होने पर गाड़ियां छोड़कर सब लोग भोजन के प्रबन्ध में लग गए। पड़ाव के चारों और वनचरों को दूर रखने के लिए आग की होलियां जला दी गयी ताकि जंगली जानवर नजदीक पहुंचकर कोई हानि न पहुंचा दें। रात को सब मुखियागण गुरूदेव भार्गव के पास आये। भगवती, विशाखा, कुर्मा और उज्जयन्त तो वहां पर पहले से ही उपस्थित थे।

हम यात्रा पर चल रहे हैं। हमें सैंकड़ों योजन जाना है हमें अपने भृगुओं को बचाना है। सेनापित रूरू के सामने टिक पाना हमारे लिए बहुत ही कठिन है। यह मैं मानता हूं और सच भी है कि इस समय मैंने क्षत्रिय धर्म धारण कर रखा है। क्षत्रिय वीर का लड़ाई के मैदान से डरकर भागना शोभा नहीं देता। इसको मेरे लिए सहन करना दिल पर बहुत बड़ा भार उठाना है। इस यात्रा में हमारा कुछ नियम बना लेना बहुत जरूरी है। हमारा पहला धर्म है कि सबको पूरा–पूरा भोजन मिल सके, दूसरा यथासम्भव व तेज गति से